



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक पत्रिका : 16वाँ अंक

वर्ष : 2020-21



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग - 793001

फैक्स संख्या : 0364-2223103, ई-मेल- agaemeghalaya@cag.gov.in



“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर आदरणीय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग महोदय के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।

“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर आदरणीय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग महोदय के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।



“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर आदरणीय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग महोदय के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।

“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर आदरणीय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग महोदय, आदरणीय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग महोदय एवं आदरणीय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग महोदय के करकमलों द्वारा वार्षिक हिन्दी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 15 वें संस्करण के विमोचन की एक झलक।



“नवीन पूर्वांचल संदेश”

वार्षिक पत्रिका : 16 वां अंक

वर्ष : 2020–21

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री फ्रेडरिक सिम्लेह महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
प्रधान संपादक	:	श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
परामर्शदाता	:	श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक मंडल	:	श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिन्दी अधिकारी श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक
		आवरण पृष्ठ मेघालय के पर्यटन स्थलों की झलकियाँ

नोट: पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संपादक मंडल या संरक्षक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। रचनाकारों की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

हिन्दी दिवस

भारतीय संविधान ने 14 सितंबर 1949 में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया। इसलिए हर साल हम 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं।

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल ॥

क

ख

ग

घ

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा 2021 समारोह के पावन अवसर पर...
सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।।

हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

“नवीन पूर्वाचल संदेश”

वार्षिक पत्रिका : 16 वां अंक

वर्ष : 2020-21

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
1.	विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर	श्री आनन्द कौशल	1
2.	“हिंदी है महान”	श्री स्वास्तिक बी. रसाईली	3
3.	असंगठित क्षेत्र हेतु सामाजिक सुरक्षा	श्रीमती रानी गिरि	4
4.	नहीं है तो क्या महत्व	श्री गणेश प्रसाद शर्मा	6
5.	आज की वास्तविकता	श्री प्रियतोष चौधरी	7
6.	ई-ऑफिस	श्री पार्थ ज्योति दे	8
7.	उत्साह	श्री अमित कुमार बर्मन	10
8.	एक आम आदमी की कविता	सुश्री प्रीति जोशी	11
9.	एक पत्नी की आप बीती	श्रीमती उमा देवी थापा	11
10.	ओलिंपिक में भारत का इतिहास	श्री सुमित कुमार वर्मन	12
11.	कोरोना एवं बेरोजगारी	श्रीमती प्रिया साव	13
12.	कोरोना	श्री गोविंद कुमार	14
13.	पुरुषवादी मानसिकता	श्रीमती लक्ष्मी देवी	14
14.	कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल इंडिया से संबंधित कार्यक्रमों की अहम भूमिका	श्री पुरुषोत्तम गिरि	15
15.	कोशिश	सुश्री आसी सोनी	17
16.	क्लास मॉनिटर	सुश्री अवंतिक कुमारी	17
17.	कौन हारा	श्री नीरज कुमार गुप्ता	18
18.	जब तुमने जन्म लिया होगा	श्री भागीरथ प्रसाद	19
19.	जिंदगी का कड़वा सच	सुश्री कंचन छेत्री	20
20.	जीवन की परिभाषा	श्री कृष्णा जोशी	20
21.	जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है	श्री शैलेन्द्र कुमार मौया	21
22.	दोस्ती	श्री सुशांत बी. रसाईली	21

23.	देवभूमि - वाराणसी	श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली	22
24.	धरती और इंसान	श्री विवेक कुमार	24
25.	बचपन के वे दिन	श्रीमती पल्लवी सोम	24
26.	नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति	श्री पुरुषोत्तम गिरि	25
27.	नियति बनाम प्रयास	श्री नीरज कुमार गुप्ता	28
28.	ग्लानि-युक्त भाव	श्री नीरज कुमार गुप्ता	28
29.	भारत की आदर्श महिलाएं	श्री दीनानाथ साह	29
30.	जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है	श्री शैलेन्द्र कुमार मौर्या	34
31.	भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग		
	हेतु आचार संहिता	श्री अमित कुमार वर्मन	34
32.	माँ	श्रीमती मेघा रानी	35
33.	मुसाफिर	श्री गोरख राम	35
34.	मेरी किताब	श्रीमती मंजिता रायचौधुरी	36
35.	मूलमंत्र	श्री राजीव जोशी	37
36.	शिलांग की बारिश	सुश्री अराधना कुमारी	37
37.	वनाग्नि	श्रीमती रानी गिरि	38
38.	COVID -19	श्री संजीव कुमार गणेश	41
39.	शहीद मेजर दुर्गा मल्ल की प्रतिमा स्थापन	श्री गणेश प्रसाद शर्मा	42
40.	शिक्षा की महिमा	श्रीमती नमिता भट्टाचार्य	43
41.	शुभ विचार	श्रीमती सायन्तनी गुप्ता	44
42.	ई-कचरा	श्रीमती स्निग्धा फुकन	45
43.	पेड़	श्री सिद्धार्थ गिरि	47





हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’,- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

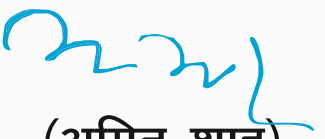
दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)





सत्यमेव जयते



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

कार्यालयीन वार्षिक गृह पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश का 16 वाँ अंक” प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार करने में “नवीन पूर्वाचल संदेश” पत्रिका का योगदान सराहनीय रहा है। हमारा उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।

विभागीय हिंदी पत्रिकाओं ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभाई है। मैं, “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16 वें अंक को पठनीय एवं रोचक बनाने हेतु संपादक-मंडल के सदस्यों सहित सभी लेखकों को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास एवं प्रचार-प्रसार करने की दिशा में बहुत योगदान प्रदान करेगी।

मुझे आशा है कि आप सभी भविष्य में भी “नवीन पूर्वाचल संदेश” पत्रिका के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहेंगे।

फ्रे सिम्लेह
(फ्रेडरिक सिम्लेह)



सत्यमेव जयते



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” का 16वाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को अपने विचार तथा साहित्यिक कौशल अभिव्यक्त करने हेतु एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है एवं राजभाषा हिंदी के विकास तथा प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति समर्पण की भावना दर्शाती है।

मुझे आशा और विश्वास है कि “नवीन पूर्वांचल संदेश” पत्रिका का यह अंक पाठकों को समृद्ध करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होगा।

मैं उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका हेतु अपनी रचनाओं अथवा लेखों के द्वारा योगदान दिया है। मैं, संपादक एवं प्रबंधक मंडल के सभी सदस्यों को भी हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पूर्ण निष्ठा के साथ राजभाषा हिंदी के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाया है।

मैं आशा करता हूँ कि हमारा कार्यालय भविष्य में भी इस पत्रिका का प्रकाशन जारी रखते हुए हिंदी के कार्यान्वयन में अपना योगदान प्रदान करता रहेगा।

काशीरौ

(काहोतो जे. येपथोमी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(लेखा व हकदारी एवं वीएलसी)



सत्यमेव जयते



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

“नवीन पूर्वाचल संदेश” का 16 वाँ अंक आपके करकमलों में प्रस्तुत करते हुए मुझे कर्तव्य पालन के उपरान्त एक खास सुखद आभास हो रहा है। इस बात की भी खुशी है कि राजभाषा यज्ञ में साधनारत रचनाकारों एवं सुधी पाठकों से भी आशानुकूल एवं लक्ष्याभिमुख अनवरत सहयोग प्राप्त हो रहा है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को संघ की राजभाषा की गरिमा प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा के प्रसार में वृद्धि करने एवं उसका विकास करने के लिए भारत सरकार ने अपने कर्तव्य पालन हेतु विभिन्न कदम उठाए हैं। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित वार्षिक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करते हुए तथा राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का वातावरण तैयार करने एवं उत्साहवर्धन हेतु हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करते हैं।

नवीन पूर्वाचल संदेश के इस अंक के प्रकाशन के उपलक्ष्य में कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को हृदय से बधाई एवं अभिनंदन। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कर्मिकों एवं उनके परिवारजनों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में पत्रिका ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है एवं साथ ही साथ कार्यालय में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। “नवीन पूर्वाचल संदेश” पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के कार्यों को हिंदी में करना तो है ही इसके अतिरिक्त उन प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना भी है जो हिंदी भाषा में लेख एवं रचनाएँ लिखने में रुचि रखते हैं।

मैं इस पत्रिका में सम्मिलित सभी लेखों एवं रचनाओं के रचनाकारों एवं इसके प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों का आभार प्रकट करते हुए “नवीन पूर्वाचल संदेश” के सफल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

(पृथ्वीपाल सिंह कानावत)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं
प्रधान संपादक “नवीन पूर्वाचल संदेश”



सत्यमेव जयते



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

अपार हर्ष का विषय है कि प्रत्येक वर्ष के भांति इस वर्ष भी “नवीन पूर्वाचल संदेश” का 16वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिंदी के सरलतम रूप को अपनाकर अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए। इस दिशा में वार्षिक पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के अंतर्गत कार्यालय के कर्मिकों द्वारा किया गया रचनात्मक प्रयास अपने आप में एक सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से संग्रहित यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।

मुझे आशा है कि “नवीन पूर्वाचल संदेश” पत्रिका सभी कर्मिकों के सृजनात्मक विकास के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, “नवीन पूर्वाचल संदेश” पत्रिका के प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकारों, प्रकाशक मंडली एवं सह-कार्यकर्ताओं को उनके सफल योगदान हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

बैजामिन करुणाकरण

बैजामिन करुणाकरण
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय...



राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु इस कार्यालय की ओर से “नवीन पूर्वांचल संदेश के” 16 वें अंक का विमोचन किया जा रहा है। एक बात तो उल्लेखनीय है, वह यह है कि हिंदी के प्रति चुंबकीय आकर्षण विश्व के कोने-कोने में छाने लगा है। राजभाषा हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है, जिसके प्रयोग में हमारा स्वाभिमान है तथा जिसके साहित्य में विश्व की समस्याओं का निदान है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारे कार्यालय में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिंदी कार्यशाला, हिंदी सप्ताह सहित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन समय-समय पर किया जाता रहा है। इसी के अंतर्गत वार्षिक गृह पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” के माध्यम से कार्यालय के विभिन्न रचनाकारों द्वारा अपनी बहुमूल्य प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक अतुल्य एवं सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। विभागीय कार्यालयों में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक हिंदी पत्रिका उस कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण होती है। यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि उन प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है जो राजभाषा हिंदी के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” ने भी इसी दिशा में नए आयाम स्थापित करने के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु सार्थक मंच प्रदान किया है। हिंदी प्रकोष्ठ इसके लिए सभी को साधुवाद देता है। इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश”, राजभाषा हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का घोटक है। आशा है कि यह नवीन अंक सभी पाठकों को रुचिकर एवं श्रेयस्कर लगेगा तथा आप अपने अमूल्य सुझावों से संपादकीय परिवार को अनुगृहीत करेंगे। पाठकों की प्रतिक्रियाएँ हमारे मार्गदर्शन में अहम भूमिका निभाएंगी।

पत्रिका की प्रगति हेतु आपके सुझावों का हृदय से स्वागत है एवं आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को और अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव प्रेषित करने की कृपा करें।

हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान ; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

--

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां

1. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

- 2 भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

- 3 भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

- 4 हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

- 5 हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

पुरुषोत्तम दास टंडन

- 6 हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

- 7 हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

डॉ. संपूर्णानंद

- 8 भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

- 9 हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।

मौलाना हसरत मोहानी

10 हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद

11 समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

12 वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।

पीर मुहम्मद मूनिस

13 देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

14 हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

15 आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए।
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

पाठकों के अनमोल विचार.....

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” के 15 वें अंक का ई-संस्करण (ई-पत्रिका सॉफ्टकॉपी) की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003

इस कार्यालय में हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” वर्ष 2020-21 का पंद्रहवां (15वां) अंक प्राप्त हुआ है, तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका को कलेवर, संयोजन, साज-सज्जा व संपादन सशक्त व प्रभावोत्पादक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उच्च कोटि की एवं संग्रहणीय हैं।

पर्यावरण प्रदूषण आज की सबसे बड़ी समस्या है। प्रदूषण के कारण अनेकों प्रकार की बीमारियां एवं समस्याएं उत्पन्न होती हैं। प्रदूषण के अनेक प्रकार हैं। इनमें एक कारण है प्लास्टिक से होने वाला प्रदूषण। प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन गया है। इस प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियों एवं समस्याओं का निदान पर श्रीमती स्निग्धा फुकन की लेख प्लास्टिक हटाओ, देश बचाओ महत्वपूर्ण एवं विचारणीय है। लेखक को साधुवाद। श्री पार्थ ज्योति दे का “डिजिटल मार्केटिंग” पर आज के भौतिक युग में बढ़ते तकनीक का एक उदाहरण है। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ इंटरनेट का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिसने अनेकों प्रकार के अवसर प्रदान किए हैं। उसी की देन है डिजिटल मार्केटिंग। लेख में डिजिटल मार्केटिंग पर विस्तार से जानकारी के लिए लेखक को बधाई। मां-बाप ईश्वर का एक रूप होते हैं। फिर मां तो मां है। जन्म देने से लेकर अंत जीवन के समय तक में के ममता का बराबरी नहीं की जा सकती। श्री राजीव जोशी सुपुत्र श्री कृष्ण जोशी ने अपने रचना मां की पीड़ा में मां के प्यार और अपने संतान के लिए तड़प का बखूबी वर्णन किया है। ढेरों बधाई। श्रीमती मोनिका तोमर का लेख “परमात्मा की लाठी” एक शिक्षाप्रद लेख है। जीवन में आदर्श रूप अपनाना ही महत्वपूर्ण होता है। इसी प्रकार अन्य लेखकों की रचनाएं भी शिक्षाप्रद एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

उप महालेखाकार व राजभाषा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर-440 001

हम सब जानते हैं कि किसी कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका द्वारा उस कार्यालय के साथ साथ अन्य कार्यालयों के कार्यालय सदस्यों में भी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान दिया जाता है। आपके कार्यालय की वार्षिक पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” पन्द्रहवें (15 वें) अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, उसके लिए धन्यवाद। आपकी पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ/लेख प्रेरणादायी एवं रोचक हैं। मुख्यतः “प्लास्टिक बचाओ, धरती बचाओ, महिलाओं की गरिमा-सुरक्षा हेतु नियम, माता-पिता और कुछ पन्ने”।

आपकी पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए इससे जुड़े समस्त सदस्यों को बधाई, साथ ही आपकी पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभ कामनाएँ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) तेलंगाना, सैफाबाद, हैदराबाद

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिन्दी वार्षिक ई-गृह पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” की पंद्रहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की साज सज्जा आकर्षक है। श्री घनश्याम कुमार की कविता कोरोना के फरिश्ते प्रशंसनीय है। श्रीमती मोनिका तोमर का कहानी “परमात्मा की लाठी” व श्रीमती सिग्धा फुकन का लेख “प्लास्टिक हटाओ, धरती बचाओ” विचारणीय व प्रासंगिक है। पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख व कविताएँ भी पठनीय व सराहनीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता व रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.), कर्नाटक

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित “नवीन पूर्वांचल संदेश” के (15वें) अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आकर्षक पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उत्तरोत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखंड रांची-834002

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” की चौदहवें (14वें) अंक वर्ष 2019–20 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

आपके कार्यालय की पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” का पंद्रहवां (15वां) अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएं, कहानियां, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। साथ ही श्री पुरुषोत्तम गिरि द्वारा लिखित आलेख “खोनोमा” पठनीय एवं अत्यंत ज्ञानवर्धक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करें यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.) तमिलनाडू, चेन्नई

पत्र क्रमांक: हिं.प्र./में./1–4/हिंदी पत्रिका/2020–21/131 दिनांक 18/09/2020 तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वांचल संदेश” के पंद्रहवें (15वें) अंक की प्रति प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सरल भाषा में हैं और रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उच्चकोटि की हैं। विशेष रूप से श्री पुरुषोत्तम गिरि द्वारा लिखा गया हिवरे बाजार में भारत के गांवों की समस्या तथा उनके निवारण हेतु एक सफल मार्ग प्रदर्शित किया गया है जिस पर अमल करके भारत के गांव स्वयं को आत्मनिर्भर बना के देश की उन्नति में योगदान दे सकते हैं। पत्रिका में श्री पार्थ ज्योति दे की “डिजिटल मार्केटिंग”, श्री अमित कुमार वर्मन की “नई शिक्षा नीति”, श्री राजीव जोशी की “मां की पीड़ा”, तथा श्री मनीष कुमार का “योग” उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

व.ले.प.अ. राजभाषा
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुंबई का कार्यालय

आपके दिनांक **16.07.2021** के ई-मेल द्वारा प्राप्त पत्र के अंतर्गत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के **15वें** अंक की ई-संस्करण की प्रति प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। इनमें से कई रचनाएं बहुत ही संवेदनशील एवं दिल को छू लेने वाली हैं। पत्रिका में दी गई रचनाओं की भाषा सहज एवं सरल है जो पाठकगण की रुचि को बांधने में सफल रहती है। छायाचित्रों का संकलन उत्तम है।

आशा करता हूं कि आपकी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” नई चेतना एवं नए विचार से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। “नवीन पूर्वाचल संदेश” परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए गोमती परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के **15वें** अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति दृष्टासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय है। श्री आनन्द कोशल का लेख वास्तविकता, श्री प्रियतोष चौधुरी का लेख करुणा धारा, श्रीमती सायन्तनी गुप्ता की कविता शुभ विचार, श्री सुशांत बी. रसाईली (पुत्र श्री राजेश रसाईली) की कविता प्यारा हिन्दुस्तान एवं श्री नीरज कुमार गुप्ता की कविता संघर्ष: अक अमृत उच्चकोटि की रचनाएँ हैं तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक महोदया के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित श्री पार्थ ज्योति दे का लेख “डिजिटल मार्केटिंग”, श्रीमती शालिनी दहिया का लेख “महिलाओं की गरिमा-सुरक्षा हेतु नियम”, श्रीमती पल्लवी सोम का लेख “मेघालय” एवं सुश्री अदविका ढाका का लेख “बचपन की मजदूरी” आदि पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

व. लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड, बैंगलोर

विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर

□ श्री आनन्द कौशल
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

शाम को लगभग अब घर जाने का समय हो रहा था। तीन अधिकारीगण प्रति दिन की भांति सामान्य: अपने-अपने कक्ष से बाहर आते हैं और श्यामलाल जी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के कक्ष की ओर जाते हैं। तभी भू-तल से आशुतोष को आते देख तीनों रुक जाते हैं और अचम्भित होते हुए उनसे पुछते हैं - 'आशुतोष जी, नमस्कार, आज अचानक! कैसे आना हुआ? वह भी इस समय?'

आशुतोष एक खुश मिजाज रखने वाले भद्र पुरुष थे। वे मुस्कुराते हुए खुशी से व्यंग्य भरी अन्दाज में - 'बस यूँही, बहुत दिनों से पुराने दोस्तों को नहीं मिला था, तो सोचा क्यों ना आज मिल लें। डर भी था कि कहीं आपलोग निकल चुके तो नहीं। परंतु यहाँ तो सारे की सारे मौजूद है। पलान क्या हैं? तो हो जाए? मौसम भी है और चार दोस्त भी।'

तभी देव, श्यामलाल जी के कमरे के ओर इशारा करते हुए बोले - 'चार नहीं पांच। भूल गए क्या?'

'ओह! सर भी हैं? चलो तो मेरा सौभाग्य, सभी से मिलना हो रहा है।'

सभी श्यामलाल जी के कमरे की ओर जाते हैं और उनके कमरे में प्रवेश करते हैं।

श्यामलाल जी, दिन भर की काम का दबाव को निपटा कर विश्राम की मुद्रा में बैठे हरी पत्ती वाली चाय की चुस्की लगा रहें होते हैं। अधिकारियों को प्रवेश करते देख - 'अरे आओ, आओ यार।' - तभी आशुतोष को देख - 'अरे आशुतोष, तुम! तुम कब आए, बिना सूचना के, अचानक? सब ठीक तो हैं ना?' - कहते हुए, MTS को बुलाने की प्रक्रिया में बेल बजाते हैं।

MTS भागते हुए आता है - सर ?

'साहब लोगों के लिए चाय लाना। हाँ और बिस्कुट भी लाना।' - क्रमश बोलते हुए - 'हाँ यार आशुतोष, कैसे आना हुआ?'

आशुतोष- 'मौसा जी का स्वस्थ कई दिनों से कुछ ठीक नहीं चल रहा है तो सोचा एक बार मिल लेता हूँ। जब आ ही गया हूँ, तो सोचा पुराने दोस्तों का भी हाल खबर ले लेता हूँ। बस चला आया। आप कैसे है सर?'

'हम भी ठीक हैं, देख ही रहे हो।'

'वह तो ठीक है सर। मेरा मतलब बाल बच्चे कैसे हैं सर?'

वे सब भी ठीक हैं अपने-अपने जगह। आज के परिस्थितियों के अनुरूप। - 'अन्य अधिकारियों के ओर देखते हुए- क्यों आज कुछ व्यवस्था है क्या? आशुतोष भी आया है। कुछ तो बनता ही है।'

मन्जित - 'आशुतोष भी यही कह रहा था सर। तो हो जाए।'

आशुतोष हिचकिचाते हुए - 'नहीं सर उसकी जरूरत नहीं हैं। मैं तो यँही इनसे मजाक कर रहा था ।'

श्यामलाल - 'नहीं यार हमारा भी कुछ तो बनता ही हैं। क्यों राजेश, ठीक कह रहा हूँ ना।'

राजेश शर्माते हुए - 'सर जैसे आप चाहें । आपके सामने हमारा क्या?'

श्यामलाल- 'वैसे आशुतोष, तुम कब तक हो यहाँ ?'

आशुतोष - 'कहाँ सर, बस दो दिन की ही तो अवकाश में आया था। परसो रविवार को वापस जाना पड़ेगा।'
- आशुतोष कुछ याद करने की कोशिश करना हैं और - 'सर जब मैं यहाँ प्रतिनियुक्ति में था तो एक भद्र अधिकारी हुआ करते थे। उनका नाम अनुपम था और दुर्भाग्य से उनके विरुद्ध में अनुशासनिक कार्यवाही चल रहा था। जो अस्वभाविक था। कारण वह खुद ईमानदारी का उदाहरण थे।'

श्यामलाल जी शोकाकुल भाव में - 'क्या तुम्हें पता नहीं कि उनका देहान्त हो गया । बस उसी दिन उनके ऊपर लगे हुए आरोपों से बरी करने की आदेश मुख्यालय से आया था ।'

आशुतोष गम्भीर होता हैं - 'चलो कम से कम प्रमाणित तो हुआ कि वे एक भद्र और ईमानदार पुरुष थे।'

राजेश भी गम्भीर हो कर कुछ क्रोध भरे स्वर में - 'मरने के उपरांत बरी करके क्या फायदा । यह तो वही हुआ ना कि विलम्बित न्याय वंचित न्याय के बराबर होता है। हमारे यहाँ सरकारी व्यवस्था ऐसा ही हैं। क्या करें।'

आशुतोष - 'राजेश जी, आप सही कह रहे हैं । हमारे विभाग में भी तो कुछ ऐसा ही हो रहा हैं। अधिकारीगण अपने हक के पदोन्नति के इंतजार में सेवानिवृत्त हो रहे हैं। अब अगर उन्हें सेवानिवृत्त के बाद पदोन्नति का आदेश मिलता हैं, तो ऐसे आदेशों का उनके लिए क्या मूल्य रह जाएगा। यहाँ भी तो बात वही हुआ ना कि विलम्बित न्याय वंचित न्याय के बराबर होना ।'



“हिंदी है महान”

□ श्री स्वास्तिक बी. रसाईली

हुआ है सारे भाषाओं का जन्म यहां
जानता है यह बात पूरा जहां।
कोई न बन सके इसके समान
हमारा हिंदी है सबसे महान।
यह है भारत की राष्ट्रीय भाषा
हर जन को है इससे आशा।
कोई न बन सके इसके समान
हमारा हिंदी है सबसे महान।
इस भाषा से है हमारी पहचान
संसार से इससे मिलता सम्मान।
कोई न बन सके इसके समान
हमारा हिंदी है सबसे महान।
कितनी सच्चाई है इस भाषा में
अंग अंग में इतना गहरा है।
कोई न बन सके इसके समान
हमारा हिंदी है सबसे महान।
इतनी मधुर है यह भाषा
जितना कहूं उससे मीठी है यह भाषा।
कोई न बन सके इसके समान
हमारा हिंदी है सबसे महान।



असंगठित क्षेत्र हेतु सामाजिक सुरक्षा

□ श्रीमती रानी गिरि

भारत का असंगठित क्षेत्र मूलतः ग्रामीण आबादी से बना है और इसमें अधिकांशतः वे लोग होते हैं जो गांव में परंपरागत कार्य करते हैं। गांवों में परंपरागत कार्य करने वालों के अलावा भूमिहीन किसान और छोटे किसान भी इसी श्रेणी में आते हैं। शहरों में ये लोग अधिकतर खुदरा कारोबार, थोक कारोबार, विनिर्माण उद्योग, परिवहन, भंडारण और निर्माण उद्योग में काम करते हैं। इनमें अधिकतर ऐसे लोग हैं जो फसल की बुआई और कटाई के समय गांवों में चले जाते हैं और बाकी समय शहरों-महानगरों में काम करने के लिए आजीविका तलाशते हैं।

देश के विनिर्माण क्षेत्र में सबसे अधिक योगदान असंगठित क्षेत्र का ही है और यह भी उतना ही सच है कि इस क्षेत्र को सामाजिक सुरक्षा के लिए चलाई जाने वाली विभिन्न योजनाओं का लाभ नहीं मिलता। देश की अर्थव्यवस्था में 50% से अधिक का योगदान करने वाले असंगठित क्षेत्र के लोगों का कुल कार्यबल में हिस्सा 80 प्रतिशत है। भारत में लगभग 50 करोड़ का कार्यबल है, जिसका 90% हिस्सा असंगठित क्षेत्र में काम करता है। इन उद्यमों में काम करने वाले श्रमिक 1948 के फैक्टरी एक्ट जैसे किसी कानून के अंतर्गत नहीं आते हैं।

असंगठित श्रम बल को व्यवसाय, रोजगार की प्रकृति, विशेष रूप से पीड़ित श्रेणी और सेवा श्रेणी में हैं। व्यावसायिक श्रेणी में छोटे और सीमांत किसान, भूमिहीन खेतिहर मजदूर, पशुपालक, बीड़ी बनाने वाले श्रमिक, निर्माण और आधारभूत संरचनाओं में कार्यरत श्रमिक, बुनकर आदि आते हैं। रोजगार की प्रकृति श्रेणी में मजदूर, प्रवासी मजदूर और दैनिक मजदूर आते हैं। विशेष रूप से पीड़ित श्रेणी में सफाईकर्मी आदि आते हैं। सेवा श्रेणी में घरेलू कामगार, सब्जी और फल विक्रेता, समाचार-पत्र विक्रेता आदि आते हैं। उपरोक्त चारों श्रेणियों के काम, मजदूरी और रहन-सहन को लेकर कई समस्याएँ हैं।

असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों की आय संगठित क्षेत्र की तुलना में न केवल कम है, बल्कि कई बार तो यह जीवन स्तर के न्यूनतम निर्वाह के लायक भी नहीं होती। इसके अलावा, अक्सर कृषि और निर्माण क्षेत्रों में पूरे वर्ष काम न मिलने की वजह से वार्षिक आय और भी कम हो जाती है। इस क्षेत्र में न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता, जो कि कर्मचारियों को दिया जाना बाध्यकारी है। इसलिए न्यूनतम मजदूरी दरों से भी कम कीमतों पर ये कामगार अपना श्रम बेचने को विवश हो जाते हैं। असंगठित क्षेत्र में रोजगार गारंटी न होने के कारण रोजगार का स्वरूप अस्थायी होता है, जो इस क्षेत्र में लगे कामगारों को हतोत्साहित करता है। रोजगार स्थिरता न होने के कारण इनमें मनोरोग का खतरा भी संगठित क्षेत्र के कामगारों से अधिक होता है। अधिकांश असंगठित श्रमिक ऐसे उद्यमों में काम करते हैं जहाँ श्रमिक कानून लागू नहीं होते। इसलिए इनकी कार्य दशा भी सुरक्षित नहीं होती और इनके लिए स्वास्थ्य संबंधी खतरे बहुत अधिक होते हैं।

जटिल आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था के बढ़ने से इन कामगारों का दैनिक जीवन कहीं ज्यादा व्यस्त और जीवन स्तर कहीं ज्यादा निम्न हो गया है। आय और व्यय के बीच असंगति ने इनकी आर्थिक स्थिति को इस लायक नहीं छोड़ा है कि ये बेहतर जीवन जी सकें। इसीलिए सरकार समय-समय पर अनेक योजनाएँ चलाती है। इन्हीं समस्याओं को समाप्त करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन पेंशन योजना की शुरुआत की गई है।

संभावना है कि अगले पाँच सालों में असंगठित क्षेत्र के कम-से-कम 10 करोड़ श्रमिकों और कामगारों को इस योजना का लाभ मिल सकेगा। तब यह योजना दुनिया की सबसे बड़ी पेंशन योजनाओं में से एक बन जाएगी। इस योजना के लिये 500 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई और यह योजना 15 फरवरी से लागू भी हो गई है। इस सब के बावजूद आज भी इस वर्ग की सामाजिक सुरक्षा का मुद्दा लगातार चिंता का विषय बना हुआ है। इस क्षेत्र से जुड़े लोगों में आजीविका असुरक्षा, बाल श्रम, मातृत्व (मैटरनिटी) सुरक्षा, छोटे बच्चों की देख-रेख, आवास, पेयजल, सफाई, अवकाश से जुड़े लाभ और न्यूनतम मजदूरी जैसे मुद्दे बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

असंगठित क्षेत्र के कामगारों तक कोई भी सामाजिक सुरक्षा योजना के लाभ पहुँचाने की राह में सबसे बड़ी बाधा यह है कि जब तक ऐसे कामगारों को चिह्नित न कर लिया जाए, तब तक इनका लाभ यह वर्ग नहीं उठा सकता और यह अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा और कल्याण के लिए सरकार ने विधायी उपायों और कल्याण योजनाओं की द्विपक्षीय नीति अपनाई है। विधायी उपायों में असंगठित क्षेत्र के कामगारों को सामाजिक सुरक्षा देने के संबंध में सरकार ने असंगठित कामगार सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008 अधिनियमित किया। यह अधिनियम राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा बोर्ड को कुछ जरूरी व्यवस्थाएँ उपलब्ध कराता है। इसके जरिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के निर्माण, जीवन और दिव्यांगता सुरक्षा, स्वास्थ्य और मातृत्व लाभ, वृद्धावस्था सुरक्षा और कोई भी अन्य लाभ, जो असंगठित मजदूरों के लिए सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है, उसके लिए अनुशंसाएँ दी जाती हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा बोर्ड का भी गठन किया गया है। राष्ट्रीय स्वाँस्यन बीमा योजना असंगठित क्षेत्र में गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों को परिवार फ्लोटर आधार पर प्रतिवर्ष 30 हजार रुपए की स्मार्ट कार्ड आधारित नकदी रहित स्वाकस्थ्या बीमा सुरक्षा देने के लिये आरंभ की गई। सरकार ने मृत्यु एवं अपंगता के लिए बीमा प्रदान करने के लिए आम आदमी बीमा योजना प्रारंभ की है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्थाक पेंशन योजना का भी कार्यान्वयन सरकार कर रही है। असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों के लिये कई अन्य रोजगार सृजन/सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को सरकार लागू कर रही है, जैसे स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मनरेगा, हथकरघा बुनकर योजना, हस्तशिल्प कारीगर व्यापक कल्याण योजनाएँ, मछुआरों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय योजना, प्रशिक्षण और विस्तार, जननी सुरक्षा योजना, राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना आदि।

सरकार द्वारा कामगारों की कुछ विशिष्ट श्रेणियों अर्थात् बीड़ी कामगारों, कुछ गैर-कोयला खान कामगारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिये कल्याणकारी निधियाँ स्थापित की हैं। अन्य कल्याणकारी उपायों में स्वास्थ्य देखभाल, आवास, बच्चों के लिए शैक्षिक सहायता, पीने के पानी की आपूर्ति इत्यादि शामिल हैं। लेकिन इस सब के बावजूद असंगठित क्षेत्र में कामगारों को चिह्नित करने में आने वाली कठिनाइयाँ बहुत बड़ी समस्या है। साथ ही आंतरिक प्रवासन के कारण पहचान का मुद्दा और बड़ी तादाद में कंपनियों का पंजीकरण न होना भी कम बड़ी बाधा नहीं है।

भारतीय संविधान की मुख्य विशेषता एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है। संविधान की प्रस्तावना और राज्य के नीति निर्देशक तत्वों से यह जाहिर है कि हमारा लक्ष्य सामाजिक कल्याण है। यह प्रस्तावना भारतीय लोगों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक-न्याय सुरक्षित करने का वादा करती है। असंगठित श्रम के क्षेत्र में कई तरह के कार्य और व्यवसाय होने के कारण उनकी सुरक्षा के लिए उन्हें चिह्नित करना सबसे बड़ी चुनौती

है। इसके लिए व्यापक कानून बनाना होगा, जो असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए न्यूनतम सुरक्षा तथा कल्याण के प्रावधान सुनिश्चित करे। यह भी ध्यान रखना होगा कि किसी नए कानून से वह प्रमुख अधिकार या सामाजिक सुरक्षा न छिन जाए, जिनकी व्यवस्था व्यापक कानून ने की है। इस व्यवस्था से भारतीय संविधान की संघीय व्यवस्था का भी सम्मान होगा तथा कई तरह के कामों में लगे मजदूरों की विशेष जरूरतें भी पूरी हो सकेंगी। सीमांत और छोटे किसानों के लिए ऋण का बेहतर प्रबंधन, सिंचाई परियोजनाओं का विकास, फसल जोखिम पर सुरक्षा और तकनीक का विकास असंगठित क्षेत्र के लिए वरदान साबित हो सकता है। गैर-कृषि क्षेत्र में कौशल विकास द्वारा रोजगार के बेहतर अवसर बनाना, सामूहिक विकास केंद्रों की स्थापना करना, अधिकाधिक लोगों को कौशल भारत (Skill India) से जोड़ना भी प्रभावी उपाय हो सकते हैं। इससे विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों की कार्य क्षमता को बढ़ावा मिल सकता है। इसके अतिरिक्त कौशल पुस्तकालय एवं रोजगार मेलों के आयोजन को अधिक प्रभावी बनाने की जरूरत है।

असंगठित क्षेत्र में हमारे देश की आबादी का एक बड़ा समूह आता है, इसलिए कार्य दशाओं, न्यूनतम मजदूरी एवं श्रमिक हितों का संरक्षण करने के लिए कानून को पुनः संरचित करना होगा। यह भी ध्यान देना होगा कि ये सभी नीतियाँ और कानून सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक रूप में भी अमल में आए ताकि असंगठित कामगारों को जरूरी लाभ मिल सके। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों को चिकित्सा, देखभाल, दुर्घटना, मुआवजा, वेतन सहित अवकाश और पेंशन योजनाओं का लाभ भी नहीं मिल पाता। ऐसे में असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए समग्र नीति बनानी चाहिए और अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को स्वीकार करते हुए व्यवस्था में उचित भागीदारी देनी चाहिए। विशेष रूप से निर्माण क्षेत्र, घरेलू नौकरों, मंडियों में काम करने वाले श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी वालों पर ध्यान देना चाहिए। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को नीति निर्माण में भागीदारी देनी चाहिए तथा राजस्व में उनकी हिस्सेदारी को देखते हुए सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध करानी चाहिए।



नहीं है तो क्या महत्व

□ श्री गणेश प्रसाद शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

गुण नहीं है तो रूप का क्या महत्व ।
विनम्रता नहीं है तो विधा का क्या महत्व ।
उपयोग नहीं है तो धन का क्या महत्व ।
साहस नहीं है तो हथियार का क्या महत्व ।
भूख नहीं है तो भोजन का क्या महत्व ।
होश नहीं है तो जोस का क्या महत्व ।
परोपकार नहीं है तो जीवन का क्या महत्व ।



आज की वास्तविकता

□ श्री प्रियतोष चौधरी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

चालीस साल पहले सभी माँ-बाप संतान की कामना करते थे और आज चालीस प्रतिशत दंपति माँ-बाप बनने से डरते हैं।

40 साल पहले बच्चे माँ-बाप का श्रद्धा करते थे परंतु चालीस साल बाद माँ-बाप बच्चों से डरते हैं।

40 साल पहले विवाह करना आसान और तलाख देना कठिन था परंतु आज विवाह कठिन और तलाख आसान हो गया है।

40 साल पहले परिवार के भरण पोषण हेतु एक सदस्य काम करता था, आज परिवार के सभी सदस्य एक बच्चे को पढ़ाने के लिए काम पर जाते हैं।

40 साल पहले गांव का आदमी काम करने शहर आता था परंतु आज आदमी शांति की खोज में शहर से गांव जाते हैं।

40 साल पहले आदमी ज्यादा खाना खाते मोटा होने के लिए परंतु आज आदमी मोटापे के डर से ज्यादा खाने से जरता है।

40 साल पहले आदमी किताब पढ़ना पसंद करते थे, परंतु आज आदमी फेसबुक और वाट्सऐप करना पसंद करता है।



ई-ऑफिस

□ श्री पार्थ ज्योति दे
सहायक लेखा अधिकारी

सरकारी कार्यालयों को पेपरलेस बनाने अर्थात कागजों पर लिखा-पढ़ी समाप्त करने का समय तेजी से करीब आ रहा है। सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस कामकाज की जानकारी देने के लिए मास्टर ट्रेनरों की तैनाती की जा रही है।

माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना है कि हमारा देश डिजिटल इंडिया हो। उसी को लेकर ई-ट्रेनिंग दी जा रही है। सरकारी दफ्तरों में ई-ऑफिस प्रणाली लागू हो चुकी है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के डिजिटल सिग्नेचर बनवाए जाने की शुरुआत भी हो गई है। सरकारी कार्यालयों में अभी फाइलें दौड़ती हैं। ई-ऑफिस व्यवस्था लागू होने के बाद फाइलों को अनुमोदित करने में विलंब की आशंका समाप्त हो जाएगी। नई व्यवस्था लागू करने से पहले सरकारी कार्यालय हाईटेक बनाए जा रहे हैं। इनको हमारे कार्यालय में ई-ऑफिस प्रणाली के बारे में प्रशिक्षित किया गया है। सरकारी कर्मियों को इस नई व्यवस्था के लिए प्रशिक्षण देने का मुझे भी अवसर मिला। सरकारी कार्यालयों के कामकाज को भी सरकार डिजिटल बना रही है। नई व्यवस्था से कागजों की बचत होगी ही, कामकाज में भी पारदर्शिता आएगी। वर्तमान समय में ई-ऑफिस प्रणाली में कंप्यूटर पर फाइल तैयार होगी। प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी का डिजिटल सिग्नेचर बनाया जा रहा है।

ई-ऑफिस प्रणाली लागू करना सरकार की प्राथमिकता के कार्यक्रमों में है। ई-ऑफिस प्रणाली लागू हो जाने से सारा पत्राचार कंप्यूटर के माध्यम से होगा तथा कार्य भी पेपरलेस होगा। जिससे कार्यालयीन कार्यों में पारदर्शिता आएगी और काम आसान हो जायेगा।

हमारे कार्यालय के कई अनुभागों में नए कम्प्यूटर लगाए गए हैं। जल्द ही सभी अनुभागों में स्कैनरों का प्रबंधन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त ई-ऑफिस की प्रक्रिया पूरी होते ही सभी अनुभागों में ई-ऑफिस की सुविधा शुरू हो जाएगी।

मैंने ई-ऑफिस के प्रशिक्षण के दौरान अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को डायरी बनाना, फाइल बनाना, डिसपैच करना, डिजिटल हस्ताक्षर, गैर संस्था से संवाद के समबन्ध में जानकारी प्रदान की। साथ ही अन्य जानकारी भी प्रदान की। प्रशिक्षण के दौरान इस कार्यालय के सभी अधिकारीगण एवं अधिकारीगण मौजूद रहे। इसके अंतर्गत आनलाइन फाइलों के निस्तारण के बारे में जानकारी प्रदान की गई। अपने लॉगइन-पासवर्ड के जरिए काम करने के तरीके बताए गए। डिजिटल हस्ताक्षर के इस्तेमाल करना भी सिखाया गया। मैंने प्रशिक्षण के दौरान कम्प्यूटर पर कार्यालयों में आने वाली प्राप्ति को डायरीकृत करने,



पत्रावली बनाने, संचरण करने, नोटशीट तैयार करने और अभिलेखों को संग्रहित करने आदि की जानकारी प्रदान की। ई-ऑफिस कार्य प्रमाण पर आधारित प्रणाली है। जिसमें अधिक कुशल इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली के साथ पत्रावलियों के मौजूदा मानवीय प्रबंधन प्रणाली की विशेषताएं सम्मिलित हैं। इस प्रणाली के इस्तेमाल से कार्य में पारदर्शिता आएगी। जवाबदेही के साथ काम होगा।

यह एक डिजिटल ऐसा वर्कप्लेस सल्यूशन अथवा कार्य-स्थान उपाय है जो सरकारी कार्यों एवं प्रक्रियाओं को पेपरलेस बनाता है। ई-ऑफिस के द्वारा कार्यालयीन कार्यों को पूरा करने में उत्कृष्ट कार्य करने पर अधिकारियों व कर्मचारियों को उत्साहित किया जा रहा है।

सरकारी कार्यालयों में, ई-ऑफिस की शुरुआत होने से लाकडाउन के दौरान भी कार्यालय में अविलंब गति से कार्यों का निष्पादन किया जा रहा है, ई-ऑफिस प्लैटफॉर्म पर एक क्लिक से पता चलता है कि फाइल की वर्तमान स्थिति क्या है। ई-ऑफिस आने से प्राजेक्ट के काम में भी तेजी आने की उम्मीद है।

पहले टेबल पर कम से कम दर्जन भर फाइलें रोजाना पड़ी रहती थीं। लाकडाउन में फाइलें लाने ले जाने का काम बंद हो गया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को घर से काम करना पड़ा, ऐसे में ई-ऑफिस तेजी से लोकप्रिय हुआ। लाकडाउन के दौरान कई काम चलते रहे। लाकडाउन में ई-ऑफिस का ही नतीजा है, जिसके कारण अब टेबल पर एक भी फाइल नहीं है।

लाकडाउन में ई-ऑफिस के कारण ही कई अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण संक्रमित होने से बचे। लाकडाउन से पहले कई बार ऐसा हुआ कि आपातकालीन स्थिति में फाइल पर अनुमोदन के लिए किसी अधिकारी का फोन आता था, लेकिन शुक्रवार को काम खत्म होने के बाद सीधे सोमवार को ही काम हो पाता था। लेकिन ई-ऑफिस के कारण लाकडाउन में कई बार कार्यालय बंद होने की स्थिति में घर से ही फाइलों को अनुमोदित किया गया है।

ई-ऑफिस के माध्यम से फाइल की हर मूवमेंट अथवा संचलन अथवा गमनागमन की जानकारी कंप्यूटर में दर्ज हो जाती है।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि हमारे कार्यालय के कई संबंधित अनुभागों के द्वारा ई-ऑफिस के माध्यम से कार्यों को गति प्रदान की जा रही है और साथ ही साथ विशेष रूप से हमारे कार्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ में तैनात हिंदी अधिकारी एवं कनिष्ठ अनुवादकों ने अपने कार्यों को समुचित रूप से ई-ऑफिस के माध्यम से नियमित रूप से निष्पादित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं जोकि अत्यंत ही प्रशंसनीय एवं सरहनीय प्रयास है।

सभी सुधी पाठकों को धन्यवाद।



उत्साह

□ श्री अमित कुमार बर्मन

जहाजों से जो टकराए, उसे तूफान कहते हैं,
तूफानों से जो टकराए उसे इंसान कहते हैं।
हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं,
हमसे है जमाना हम जमाने से नहीं।।

जिंदगी के बोझ को हंसकर उठाना चाहिए,
राह की परेशानियों में भी मुस्कुराना चाहिए।
बाधाएं क्या रोक सकती है आगे बदलने वालों को,
विपदाएं कब रोक सकीं हैं पथ पर बढ़ने वालों को।।

जो बीत गई सो बीत गई तकदीर से शिकवा कौन करें,
जो तीर कमान से निकल गया उस तीर का पीछा कौन करें।
अपने दुख में रोने वाले मुस्कुराना सीख लो,
औरों को दुख दर्द में तुम काम आना सीख लो।।

खुब पसीना बहाता जा जिंदगी में आगे बढ़ता जा,
यह कशती तो डगमगाती रहेगी तू हंसता जा या रोता जा।
खुदा को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बंदे से पूछे कि बता तेरी रजामंदी है क्या।।



एक आम आदमी की कविता

□ सुश्री प्रीति जोशी

मैं एक आम आदमी हूँ,
मैं सुख-दुख: में खुश रहना चाहती हूँ।
मैं कवि नहीं हूँ,
किंतु कविता लिखने की प्रयास करती हूँ।
मैं ज्ञानी नहीं हूँ,
किंतु ज्ञान आहरण करना चाहती हूँ।
मैं छात्रा नहीं हूँ,
किंतु शिक्षा प्राप्त करना चाहती हूँ।
मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ,
किंतु विज्ञान पर भरोसा करती हूँ।
मैं कोई समाज सेवक नहीं हूँ,
किंतु सबकी सेवा करना चाहती हूँ।
मैं अभियांत्रिक नहीं हूँ,
पर सब कुछ बनाने की कोशिश करती हूँ।
मैं एक आम आदमी हूँ,
मैं सुख-दुख: में खुश रहना चाहती हूँ।

एक पत्नी की आप बीती

□ श्रीमती उमा देवी थापा

चाहती थी चढ़ाना एक अंश फूल का
आपके कब्र पर
आपके जाते ही वक्त गम में पली
सांसारिकता से अनजान आपकी बच्ची।
जानती हूँ आप शहीद हुए रणक्षेत्र में,
गर्वित हूँ मैं भी आपके लिए।
आपकी बच्ची के लिए
कोई नहीं है पिता बुलाने को,
आपके के साथ मिले नहीं रूठने को ।
पहचाने भी नहीं आपकी सूरत,
सिर्फ कहानी सुनी है अपनी माँ से,
आपकी जाने के बाद।
आई हूँ लेकर एक अंश फूल का
चढ़ाने आपके कब्र पर।
माँ की ममता से ही बड़ी हुई,
संसार में कदम रखी,
बिना पिता के सहारे,
गर्वित पिता की बच्ची।
आई हूँ लेकर एक अंश फूल का
चढ़ाने आपके कब्र पर।

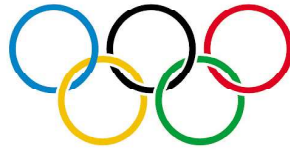


ओलिंपिक में भारत का इतिहास

□ श्री सुमित कुमार वर्मन

आधुनिक ओलिंपिक खेलों की शुरुयात आज से करीब 125 वर्ष पूर्व ग्रीस के ऐथेंस शहर में 1896 में हुआ था। भारत ने पहली बार ओलिंपिक में 1900 ई. में भाग लिया था, जो पेरिस में हुआ था। ओलिंपिक दो तरह के होते हैं-समर ओलिंपिक तथा विंटर ओलिंपिक, समर ओलिंपिक अपने आप में काफी विस्तृत है, जिसमें लगभग सभी देश भाग लेते हैं, जबकि विंटर ओलिंपिक में सभी देश भाग नहीं लेते हैं। भारत की अधिकतम भागीदारी समर ओलिंपिक में होती है, और लगभग जो

समर ओलिंपिक है। हालांकि विंटर से भागीदारी कर रहा है। परंतु एक या का प्रतिनिधित्व करने वाले पहले एथलीट से पेरिस ओलिंपिक में हिस्सा लिया था ओलिंपिक 1908 और 1912 में भारत



भी मेडल भारत ने जीते हैं वे अधिकतर ओलिंपिक में भी भारत पिछले कुछ दशकों दो खेलों में ही। ओलिंपिक खेलों में भारत जर्मन रिचर्ड थे जिन्होंने भारत की ओर और दो मेडल भी जीते। अगले दो की ओर से कोई भागीदारी नहीं हुई थी।

1916 का ओलिंपिक प्रथम विश्व युद्ध के कारण निरस्त हो गया। उन दिनों भारत की टीम ब्रिटिश इंडिया के नाम से हिस्सा लेती थी। फरवरी 1924 में अखिल भारतीय खेलों की शुरुयात ये देखने के लिए हुई कि भारत की ओर से कौन हिस्सेदारी लेगा। इस प्रकार 2021 में हम देखते हैं कि भारत में बहुत ही अच्छे प्रदर्शन किए और लोगों के दिलों को जीता। 2021 का ओलिंपिक जापान के टोकियो में हुआ था जिसमें भारत की ओर से कुल सात (7) मेडल प्राप्त हुए जिसमें नीरज चोप्रा ने जेबलिन थ्रो में गोल्ड मेडल जीत कर भारत का गौरव बढ़ाया।



कोरोना एवं बेरोजगारी

□ श्रीमती प्रिया साव
कनिष्ठ अनुवादक

कोरोना जिसे हम नॉवल कोरोना वायरस के नाम से जानते हैं। महामारी कोरोना एवं बेरोजगारी का संबंध एक दूसरे के साथ इस तरीके से है जिस तरीके से एक रथ के दो पहिये होते हैं जो साथ साथ चलते हैं।

कोरोना एवं बेरोजगारी दो घनिष्ठ मित्र हैं। जो एक दूसरे का हाथ कभी नहीं छोड़ सकते हैं। कोरोना के कहर ने एक साधारण व्यक्ति को अपंग बना दिया है। एक व्यक्ति चाहकर भी आगे नहीं बढ़ सकता है। कोरोना ने इंसान को एक ऐसे साँचे में ढाल

शक्ति समाप्त हो गयी है। इस को छीन कर बेरोजगार बना हँसते गाते परिवार की खुशियाँ जो दिन भर काम करके कुछ सब साथ में बैठ कर खुशीपूर्वक क्योंकि रोजगार के अभाव में जिससे वह अपने घर के लिए कोरोना एवं बेरोजगारी में ऐसी कारण गरीब परिवार की सारी हो गई। आज उस परिवार के भी खुशियाँ दिखायी नहीं पड़ती



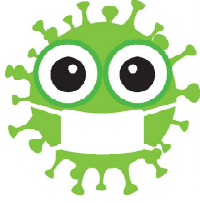
दिया है, जिसमें गति करने की कोरोना ने मानव के रोजगार दिया है। इस कहर ने कितने छीन ली है। परिवार का मुखिया पैसे कमाकर घर आता और भोजन ग्रहण नहीं कर सकता उसके पास इतने पैसे नहीं हैं, अनाज जुगार कर पाये। आज मित्रता हुई कि उस मित्रता के खुशियाँ एक मुर्दे की भाँति दफन सदस्यों के चेहरे पर तनिक है। बेरोजगारी तो कई दशकों

से चली आ रही है। परन्तु इस कोरोना महामारी लोगो को इतनी तीव्र गति से बेरोजगार बनाया जितनी तीव्र गति तो समुद्र के लहरों में भी नहीं होगी। कोरोना महामारी लोगो को बेरोजगार बनाने में एक विस्फोटक के समान सिद्ध हुआ। कोरोना महामारी ने करोड़ों लोगो के चेहरे की खुशियाँ छीन उसे बेरोजगार बना दिया। इस कोरोना में तो इतनी ताकत है कि इसने अर्थव्यवस्था की भी कमर तोड़कर रख दी है। कोरोना के इस महामारी में बेरोजगार हुए युवा को एक ऐसे जंजीर में बांध दिया है जिस जंजीर को तोड़कर कर रोजगार की तलाश में घर से बाहर निकलने में भी असमर्थ है। वह घर बैठे रोजगार पोर्टल पर नौकरी तलाश रहे हैं शायद उन्हें रोजगार पोर्टल के जरिये कोई नौकरी प्रदान कर सके। रोजगार पोर्टल पर बेरोजगार युवा वर्ग तेज रफ्तार से नौकरी पाने के लिए पंजीकृत कर रहे हैं। परन्तु करोड़ आबादी वाले देश में तो नौकरी मिलना तो कोयले की खान से हीरा निकालने की भाँति है।

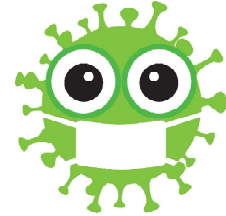


कोरोना

□ श्री गोविंद कुमार



सन दो हजार बीस की सौगात आई
तो हमने अपने पड़ोसी देश से पाई।
कितनों ने रोजगार गवाया
बच्चों का स्कूल छुड़वाया।
लाखों ने है जान गंवाई
कैसी यह कोरोना वायरस आई।
बले वारियर, डहक्टर, नर्स और सिपाही
सैनिटाईजर, मास्क और सामाजिक दूरी।
अब तक यही दवा कोरोना की पाई
आओ हम सब मिलकर करें खुद ही तैयारी।
स्वच्छ, स्वस्थ रहे घर पर
योग करें, क्षमता बढ़ाएं
और भगाएं कोरोना।



पुरुषवादी मानसिकता

□ श्रीमती लक्ष्मी देवी

देखो समाज की धारा किस दिशा में बढ़ रही
महिलाओं के साथ रोज कैसी घटना घट रही।
पुरुषों में कैसी विसंगति देखो आ रही
देखो समाज की धारा किस दिशा में बढ़ रही।
पहले महिलाओं का जो सम्मान रहा
वह सम्मान नित्य घट रहा।
जो इस समाज की जननी है यहाँ
उसे रोज पुरुष कलंकित करें यहाँ।
इस समाज के हर घर में यहाँ
देखो मां और बेटी भी यहाँ
फिर पुरुष को अहसास क्यों नहीं होता?
महिलाओं का सम्मान क्यों नहीं होता?

कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल इंडिया से संबंधित कार्यक्रमों की अहम भूमिका

□ श्री पुरुषोत्तम गिरि
कनिष्ठ अनुवादक

नमस्कार,

भारत के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विषय पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने कहा कि डिजिटल यात्रा ने सशक्तीकरण, समावेश एवं डिजिटल परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित किया है तथा इसका सकारात्मक प्रभाव भारतीय नागरिकों के जीवन के सभी पहलुओं में महसूस किया जा रहा है। इस अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी ने जैम ट्रिनिटी (JAM Trinity & Jan Dhan, Aadhaar and Mobile) की उपलब्धियाँ बताते हुए कहा की कोविड-19 महामारी में भी डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के कारण ही लोग घर से काम करने डिजिटल पेमेंट करने छात्र टीवी, मोबाइल, लैपटॉप से शिक्षा प्राप्त करने मरीज टेली-परामर्श लेने में तथा भारत के सुदूर क्षेत्र के किसान सीधे अपने बैंक खातों में पीएम-किसान योजना का लाभ प्राप्त करने में सक्षम हैं।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने आधार, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, कॉमन सर्विस सेंटर, डिजीलॉकर, मोबाइल आधारित उमंग (UMANG) सेवाएँ, MyGov के माध्यम से शासन में भागीदारी, आयुष्मान भारत, ई-अस्पताल, पीएम-किसान, ई-नाम, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, स्वयं (SWAYAM), स्वयं प्रभा (SWAYAM PRABHA), राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल, ई-पाठशाला आदि के माध्यम से भारतीय नागरिकों के जीवन के सभी पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। राष्ट्रीय AI पोर्टल (National AI Portal) और 'युवाओं के लिए जिम्मेदार AI' (Responsible AI for Youth) को हाल ही में एआई-संचालित भविष्य की नींव रखने के लिए शुरू किया गया। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने कोविड-19 स्थिति के दौरान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे- आरोग्य सेतु, ई-संजीवनी, MyGov के माध्यम से सेनिटाइजेशन एवं सोशल मीडिया प्लेटफार्म आदि। ई-सेवाओं की संख्या वर्ष 2014 में 2,463 से बढ़कर मई 2021 तक लगभग 4,000 हो गई है। मोबाइल एवं इंटरनेट कनेक्शन का उपयोग क्रमशः लगभग 117 करोड़ तथा 70 करोड़ उपयोगकर्त्यों द्वारा किया जा रहा है। न्यू-एज गवर्नेंस के लिए यूनिफाइड मोबाइल एप (उमंग-UMANG) में 860 सेवाएँ चालू हैं और इसे अब तक लगभग 3 करोड़ से अधिक लोग डाउनलोड कर चुके हैं। MyGov को देश में सहभागी शासन की सुविधा के लिए शुरू किया गया है जिसमें कुल लगभग 1.17 करोड़ पंजीकृत प्रतिभागी हैं। कोविड-19 स्थिति के दौरान डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत आरोग्य सेतु को 03 सप्ताह में 12 भारतीय भाषाओं के साथ विकसित किया गया है जिसे अब तक लगभग 14 करोड़ लोगों ने डाउनलोड किया है इस एप ने 350 से अधिक कोविड-19 हाटस्पॉट (कोरोना वायरस से प्रभावित एवं संक्रमित क्षेत्र) की पहचान करने में मदद की। कोविड-19 से निपटने हेतु सोशल मीडिया हेतु ग्राफिक्स, वीडियो, उद्धरणों के माध्यमों के द्वारा नागरिकों को जागरूक करने में MyGov वेबसाइट और फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकिडन जैसे सोशल मीडिया चैनलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार डिजिटल इंडिया कार्यक्रम

को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दे रही है जिससे 'पारंपरिक अर्थव्यवस्था' से 'डिजिटल अर्थव्यवस्था' की तरफ तेजी से बढ़ा जा सके। नागरिकों द्वारा सामान्य जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में दैनिक कार्यों के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की क्षमता को डिजिटल साक्षरता कहा जाता है। यह योजना देशभर में करोड़ों लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए चलाई जा रही है, जिसके अंतर्गत



देशभर में सभी राज्यों/केंद्रशासित क्षेत्रों में अधिकृत राशन डीलरों सहित ऑनलाइन और आशा कार्यकर्ताओं को सामान्य सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान और प्रशिक्षण दिया जाता है। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने हाल ही में कहा कि आने वाले वर्षों में भारत सरकार डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के लिए मुख्य क्षेत्र 'ईज आफ डूइंग बिजनेस' एवं 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' होना चाहिए। आने वाले वर्षों में भारत को 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के लिए प्रौद्योगिकी को प्रमुखता देने और उद्यमों को सरकारी सेवाओं में न्यूनतम मानव इंटरफेस के साथ विस्तार की अनुमति देनी चाहिए। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत कर संग्रह में सुधार लाने, कृषि एवं चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम प्रौद्योगिकी के निर्माण पर भी जोर दिया जाना चाहिए। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि समय आ गया है कि 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' को राष्ट्रीय स्तर पर बड़े पैमाने में लागू किया जाए ताकि इससे भारत के समावेशी विकास में तकनीकी की अहम भूमिका को परिभाषित किया जा सके और वैश्विक स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था की आर्थिक वृद्धि को गति दी जा सके।

इसके अतिरिक्त, हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना है कि हमारा देश तीव्र गति से डिजिटल इंडिया में परिवर्तित हो एवं साथ ही साथ भारत को विश्व में डिजिटल कार्यक्रमों की प्रक्रियाओं में अग्रणी स्थान प्राप्त हो। इसी संदर्भ में उपरोक्त के अतिरिक्त सभी सरकारी कार्यालयों में भी तीव्र गति से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों से संबंधित सभी प्रशिक्षणों को नियमित रूप से ई-प्रशिक्षण के द्वारा प्रदान किया जा रहा है एवं वेबिनार के माध्यमों से कार्यालयों का ई-निरीक्षण एवं ई-बैठकें भी की जा रही हैं। लगभग सभी सरकारी कार्यालयों में ई-ऑफिस प्रणाली प्रारंभ हो चुकी है। कार्यालय में ई-ऑफिस के माध्यम से कार्यों को तीव्र गति के साथ निपटान किया जा रहा है। यह एक अत्यंत प्रशंसनीय एवं सरहनीय कदम है।

धन्यवाद।



कोशिश

□ सुश्री आसी सोनी

कभी ये मत सोचिए कि आप अकेले हो
बल्कि ये सोचिए कि आप अकेले ही काफी है।
माता पिता का आशीर्वाद
जब हो हमारे साथ तो जीत होगी पक्की।
और गुरुजनों का आशीष मिले जब
जिंदगी में हम आगे बढ़ते चले तब।
अगर खुद से ना हारे
तो जीत निश्चित है।
हर पग पग पे हो बाधा यारो पर डर कैसा है यारो
जब हर बाधा का हल हो अपने हाथ में यारों।
करना है, करना है कर सकते हैं
हर बाधाओं से हम लड़ सकते हैं।
जिसका सिर किताबों में झुका रहता है
एक दिन दुनिया उसके आगे झुकी रहती है।
तू भी वही कर जो सूर्य करता है
चलते रह बिना परवाह किए।
बढ़ता जा आगे बिना अंगारों की परवाह किए
और वक्त के आगे कभी झुकते नहीं
मेहनत करो बिना आवाज के यारो।
कि खुदा भी किस्मत लिखने से पहले
हजार बार सोचे कि बन्दे में क्या कमी है।

क्लास मानिटर

□ सुश्री अर्पितिका कुमारी

जो कक्षा में बने मॉनिटर
कोरीशान दिखाते हैं।
आता जाता कुछ भी नहीं,
पर हम पर रोब जमाती हैं।
जब क्लास में टीचर नहीं होती,
तब खुद टीचर बन जाते हैं।
कॉपी-पेंसिल लेकर,
बस नाम लिखने लग जाते हैं।
खुद तो हमेशा बात करते हैं,
हमें चुप करवाने में लगे रहते हैं।
अपनी तो हर गलती माफ,
हमें बल्कि चिढ़ाते हैं।
कक्षा संभाल पाते नहीं,
बस चीखते और चिल्लाते हैं।
भगवान बचाए इन मॉनिटर से,
इन्हें हम नहीं चाहते हैं।



कौन हारा

□ श्री नीरज कुमार गुप्ता
आंकड़ा प्रविष्टक

कहते प्रयास व्यर्थ न होता,
वक्त प्रतीक्षण कहां है सोता!
पर नियति अगर बन जाए शत्रु,
तब हर सिक्का मिलता है खोटा!!

दुर्भाग्य से प्रहार कराया,
सौभाग्य को आहार बनाया!
देख समर्पण तिलमिलाया भाग्य खुद पर,
कहा कैसे प्रति भट शत्रु है आया !!

आधे समय को उसने खाया,
इतर कार्यों में मुझको उलझाया !
पर रात्रि से मित्रता निभाकर,
उसके चालों का उत्तर भिजवाया !!

लालच का अंबर दिखाया,
संतुष्टि का भी पाठ पढ़ाया !
ठोकर मारा भ्रमों को मैंने,
निष्ठा का उसको स्वाद चखाया !!

कहा भाग्य ने हारा तू, यह तेरा अंतिम साल है,
न जीता मुझसे कोई, नाम मेरा ही तो काल है !
कहा मैंने मत इतरा इतना, नजर झुका, घुटनों पर आ,
समक्ष तेरे कोई निर्बल नहीं स्वयं महाकाल का लाल है !!



जब तुमने जन्म लिया होगा

□ श्री भागीरथ प्रसाद
आंकड़ा प्रविष्टक

कहीं रात्रि तिमिर को चीरकर वह प्रकाश निकला होगा,
शिथिल पड़े सरोवर में कमल का पुष्प खिला होगा,
जब तुमने जन्म लिया होगा।

तुम्हारे पिता के हृदय में हर्ष का धूप निकला होगा
वहीं माँ के जीवन का श्रेष्ठ उपहार मिला होगा
जब तुमने जन्म लिया होगा।

स्त्रियों को सम्मानित करते पुरुष इस धरती पर अवतरित हुआ होगा,
मानवता को बचाने वाला मानव इस धरती पर प्रतीत हुआ होगा,
जब तुमने जन्म लिया होगा।

किसी वन उपवन में पलाश पल्लवित हुआ होगा,
एक पुष्प उस माँ को मिला होगा,
जब तुमने जन्म लिया होगा।

सुंदर निर्मल हृदय से तुम्हारा शरीर संकलित हुआ होगा,
ब्रह्मांड की शक्तियों से चरित एक हृदय उदित हुआ होगा,
जब तुमने जन्म लिया होगा।



जिंदगी का कड़वा सच

□ सुश्री कंचन छेत्री

गलत लोग सबके जिंदगी में आते हैं,
लेकिन ये लोग हमेशा सही सबक देकर जाते हैं।
जिंदगी लंबी नहीं गहरी मायने रखती है
जितने के बाद तो सभी गले लगाते हैं।
लेकिन हारने के बाद जो गले लगाए
सिर्फ वही अपना होता है।
अक्सर जिसके हालात सही हो जाते हैं
उसके साथ सभी लोग भी अच्छे हो जाते हैं।

मोह माया इतना ना कर कि बुराइयां छुप जाए
और घृणा इतनी भी न कर कि अच्छाइयां दिखाई भी न दें।
जिंदगी जख्मों से भरी है वक्त की
मरहम बनाना सीख लो।
हारना तो है ही मौत के सामने
हाल ए जिंदगी को जीना सीख लो।
जिंदगी में सफल होना है तो
लड़ना सीख लो।



जीवन की परिभाषा

□ श्री कृष्णा जोशी
एम.टी.एस.

जीवन की इस घोर भवर में
आशा की घनघोर कहर है।
दिल की नाव गोता खाए
उथल-पुथल से दिल घबराए।
क्या है सच ये जो जीवन
सुख की चाह में सब अर्पण।
सच्चे सुख की क्या परिभाषा
कौन सी विधि पूरी करे आशा।
सब कुछ पाकर भी है कोई उदास
विकास की अंधी गति में चलती,

कभी गिरती कभी उठती
कोई नहीं है अपने जीवन में
बस रह जाते जलन दूसरों से
कभी तितली, कभी फनी
उजाड़ देता है मानव जीवन।
सब कुछ बिछड़ जाता है
हमेशा ऐसा क्यों होता है
ये जाने भगवान
बंधुवत हो जाएगा सारा संसार
जब हम सब रखें उत्तम विचार।



जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है

□ श्री शैलेन्द्र कुमार मौर्या
डी.ई.ओ.

आपने देखा होगा कि बच्चों में हर चीज के प्रति अत्यधिक उत्साह होता है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक वे हमेशा उर्जा से भरे रहते हैं। उनमें एक दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा का भाव भले ही हो, किंतु वे अपने दिन के भीतर नफरत सींचकर नहीं रहते। वे कुछ भी नया जानने के लिए आतुर रहते हैं, उन्हें न तो अनदेखे भविष्य की चिंता होती है और न ही वे अपनी आत्मा पर बीते कल का बोझ ढोना पसंद करते हैं। पर हमारे जीवन का एक पहलू यह है कि जैसे-जैसे हम बड़े और परिपक्व होते हैं वैसे-वैसे इस उत्साह, मस्ती और जिंदादिली से वंचित होते जाते हैं। स्कूल, कहलोज की शिक्षा पूरी करने के बाद जब जीवन के वास्तविक संघर्षों से दो-चार होना पड़ता है तो जीवन के प्रति उत्साह में अचानक कभी महसूस होने लगती है। आज हम कोशिश करेंगे कि अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी सूत्र एकत्रित करें।

पहला सूत्र यह है कि जीवन में रचनात्मकता की कुछ न कुछ संभावना बनी रहनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि आप अपने जीवन का रचनात्मक कार्यों में गुजारे। इसका सूत्र यह है कि व्यक्ति को किसी न किसी सामाजिक कार्य से जुड़े रहना चाहिए।

जीवन में उत्साह बनाए रखने के लिए कुछ और भी सूत्र है जैसे कि उम्र चाहे कितनी भी हो जाए अपने भीतर के बच्चे को मरने नहीं देना चाहिए। अपने भीतर के बच्चे को जिंदा रखने का अर्थ सिर्फ इतना है कि संकोच और झिझक को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए और अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी कुछ समय अच्छे दोस्तों और रुचियों के लिए जरूर निकालें।

दोस्ती

□ श्री सुशांत बी. रसाईली

दोस्ती है एक प्यारा फूल
कभी न जाना इसको भूल।
बुरे वक्त जो काम है आता
सच्चा दोस्त वही कहलाता।



दोस्त सभी को भाता है
फ्युचर में काम आता है।
दोस्ती है एक प्यारा फूल
कभी न जाना इसको भूल।

आगर कोई अपना न हो
दोस्त अपना बन जाता है।
दोस्ती है एक प्यारा फूल
कभी न जाना इसको भूल।

अगर कोई यार न हो
जीवन सूना-सूना हो
दोस्ती है एक प्यारा फूल
कभी न जाना इसको भूल।

देवभूमि - वाराणसी

□ श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली
कनिष्ठ अनुवादक

उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर 'बनारस' या 'काशी' संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक जिसे देवताओं के शहर के रूप में जाना जाता है। इसे 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान की नगरी' आदि विशेषणों से भी संबोधित किया जाता है। गंगा नदी, जो आमतौर पर हिमालय से दक्षिण में समुद्र तक जाती है, काशी में एक मोड़ लेती है और उत्तर की ओर चलती है। गंगा का यह उल्टा प्रवाह आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि ऐसे स्थानों पर तांत्रिक विचारों को अंजाम दिया सकता है।

स्थानीय कथाओं के अनुसार, देवता जब धरती पर आए तो उन्हें काशी शहर बहुत पसंद था। एक बार जब शहर में सूखा पड़ा तो की तलाश की, जो सूखे रिपुंजय को पाया, जो अनुष्ठान और धार्मिक सूखे का अंत करेंगे। उनकी देवता अपने विशिष्ट जाएं और उन्हें अपने करने के लिए काशी में ने इसे स्वीकार और वे के लिए रवाना हो गए



ब्रह्मा ने किसी ऐसे व्यक्ति का अंत कर सके। उन्होंने आवश्यक वैदिक प्रथाओं का प्रदर्शन करके एक शर्त यह थी कि सभी निवास स्थान पर लौट अनुष्ठानों का संचालन अकेला छोड़ दें। देवताओं अपने-अपने शासन-क्षेत्र और रिपुंजय ने उन अनुष्ठानों का संचालन किया जिससे उस शहर में वर्षा वापस आई। उन्होंने काशी में धर्म की स्थापना की और एक महान राजा बने। उन्होंने 10 घोड़ों के साथ अश्वमेध यज्ञ किया, जो एक बहुत ही असामान्य उपलब्धि थी जिससे वाराणसी में दशाश्वमेध घाट का उदय हुआ और वह एक समृद्ध और खुशहाल साम्राज्य बना।

रिपुंजय का नाम बदलकर राजा दिवोदास रखा गया। पुरु कुल के राजा दिवोदास द्वारा दूसरी वाराणसी की स्थापना का उल्लेख महाभारत और अन्य ग्रन्थों में आता है। समय के साथ, देवताओं, विशेष रूप से शिव जी अपने प्रिय शहर काशी वापस लौटना चाहते थे। साथ ही पृथ्वी पर यह शिव जी का सबसे पसंदीदा निवास था। उन्होंने दिवोदास से छुटकारा पाने का उपाय सोचा। उन्होंने उसे विचलित करने के लिए योगिनियों को भेजा, परंतु योगिनियां ऐसा करने से पीछे हट गईं। अग्नि और वायु को बुलाया गया, परंतु जब उन्होंने देखा कि राज्य में सभी खुशहाल हैं, तो वे वहां में बस गए। चिंतित देवताओं ने गणेश की ओर देखा जिससे लोगों को भयानक सपने आए, परंतु इससे भी कोई काम नहीं बना। अंत में, विष्णु ने एक धर्मोपदेश का रूप धारण किया और जाकर राजा से कहा कि उनके

राज्य में दुख और सभी के असंतोष का कारण सांसारिक इच्छाओं और भौतिक चीजों के प्रति लगाव का परिणाम था। यदि वह उन्हें त्याग देगा, तो वह वास्तव में खुश होगा। विष्णु के सपने से प्रभावित होकर दिवोदास एक भिक्षु बन गए, शायद एक बौद्ध भिक्षु, यही कारण है कि विष्णु के इस धार्मिक रूप को हिंदू पुराणों के मायामोह बुद्ध के रूप में जाना जाता है, जो राजाओं को बिना लड़ाई किए शक्ति को त्यागने के लिए छल करते हैं। दिवोदास ने काशी छोड़ दी और देवता अपने प्रिय शहर लौट आए। यह माना जाता है कि दिवोदास बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसी धार्मिक परंपराओं के प्रभाव में, शहर को त्यागने से पहले वैदिक अनुष्ठानों के अनुयायी थे। उन्होंने काशी छोड़ दिया ताकि देवता अपने निवास स्थान को पुनः लौट सकें।

हम जानते हैं कि काशी हिंदुओं, बौद्धों और जैनियों, मुसलमानों, विशेष रूप से सूफी परंपराओं का पालन करने वाले लोगों के लिए पवित्र स्थल है। यह कबीर और तुलसीदास की नगरी है। हिंदुओं के लिए यह एक पवित्र शहर है क्योंकि यह वह स्थान है जहां शिव जी काशी विश्वनाथ के रूप में निवास करते हैं, जहां देवी शक्ति अन्नपूर्णा के रूप में निवास करती हैं, और जहां विष्णु- बिंदू माधव के रूप में निवास करते हैं। प्राचीन काल में काशी शहर कौशल की भूमि का एक हिस्सा था। राजा दशरथ से विवाह करने से पूर्व राजकुमारी कौशल्या इस भूमि की थीं। अयोध्या और काशी के बीच एक घनिष्ठ संबंध है।

वाराणसी में 100 से अधिक घाट हैं। भारत के कई कवि, लेखक, संगीतज्ञ, दार्शनिक वाराणसी में रहे हैं, यथा कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, त्रैलंग स्वामी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित रवि शंकर, पंडित हरि प्रसाद चौरासिया, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि। सारनाथ से निकटता के कारण बौद्धों का इस शहर से बहुत लगाव है, जहां भगवान बुद्ध ने मोक्ष प्राप्त करने के बाद अपना पहला उपदेश दिया था, धर्म चक्र अर्थात्- धर्म के ज्ञान की परिक्रमा शुरू की। जैन इसे पवित्र मानते हैं क्योंकि चंद्रप्रभा और पार्श्वनाथ सहित चार तीर्थंकर यहाँ पैदा हुए थे। ये प्राचीन प्रसंग हमें स्मरण करवाते हैं कि किस प्रकार काशी इंडिक सभ्यता का पवित्र स्थल बना।



धरती और इंसान

□ श्री विवेक कुमार

मानव को नहीं भुलाना चाहिए
कि उसके साथ साथ
जीवन कई हजार लाख
रहते हैं इस धरती पर।
ज्ञानहीन विवेकहीन
बस वृत्ति पर निर्भर
लेकिन प्रकृति के साथ
रचे बसे हैं इस ढंग से
कि दुखता नहीं दिल धरती का
उसके जीवन मरण में।
और मानव
धरती को लहू लुहान किए हैं
प्रकृति को परेशान किए हैं
जिम्मेदारियां भूलकर
कि इसके सहोदर जीवों को
जरूरत है संरक्षण की
जो प्यार से उन्हें रखें
सहलाए, दुलारे
और कठिन क्षणों में उबारे
लेकिन उसके अपने
जाने किस नशा में
बेहताश भाग रहा है।
जाने कब नींद की खुमारी मिटे
तिमिर की मोटी चादर फटे
टपके कहीं से प्रज्ञा बूंद मन में
सामूहिक दायित्व बोध जगा सके।

बचपन के वे दिन

□ श्रीमती पल्लवी सोम

कभी रेत के उंचे ढेलों पर जाना
घरोंदे बनाना बनाकर मिटाना,
चाहत चांद को पाने की थी
पर दिल तितली का दीवाना था।

वह बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था।
वह मासूम चाहत की तस्वीर अपनी
वह खिलौनों का जागीर अपनी
बारिश में कागज की कश्ती
हर मौसम सुहाना था।

न दुनिया का गम था
न जख्मों का पैमाना था।
रोने की भी वजह न थी
न हंसने का बहाना था।
जिंदगी के मोड़ पर थी उमंग
जुबान पर न होता था।
कोई गम का कारण
अब भी कुछ लिखना बाकी है
कुछ यादें शायद बाकी हैं
न जाने आज उन पलों को
याद बहुत सताती है।
वक्त को रोक लूं, जी चाहता है
क्यों हो गए हम इतने बड़े
इससे अच्छे तो थे मेरे
बचपन के वे दिन।



नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति

□ श्री पुरुषोत्तम गिरि
कनिष्ठ अनुवादक

भारत में ऊर्जा की खपत लगातार बढ़ रही है तो वहीं नवीकरणीय ऊर्जा में भी अपार संभावनाएँ देखी जा रही हैं। ऊर्जा किसी भी देश के विकास हेतु अत्यंत आवश्यक होती है। किसी देश में प्रति व्यक्ति होने वाली ऊर्जा की खपत वहाँ के जीवन स्तर का भी सूचक है। आर्थिक विकास का भी ऊर्जा उपयोग के साथ मजबूत संबंध होता है। इसलिए भारत में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था हेतु ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बहुत आवश्यक है। इन्हीं कारणों से तेल उत्पादक देशों से ऊर्जा की लागत को कम करने का आग्रह किया गया है ताकि वैश्विक अर्थव्यवस्था को मदद मिल सके।

कुछ समय पूर्व आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली बैठक में भी 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित संसाधनों से 40 फीसदी बिजली उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण एवं सुख-सुविधाओं हेतु संसाधनों की तेजी से खपत हो रही है। लेकिन इससे पर्यावरण प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याओं का जन्म हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या और ऊर्जा आपूर्ति के बीच कैसे संतुलन बनाया रखना अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरण और भविष्य की पीढ़ी को भी ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। नवीकरणीय ऊर्जा बेहतर निदान है। चाणक्य नीति कहती है कि 'किसी समस्या का उपाय नहीं, निदान ढूंढो'। इसीलिए ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने, पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण फैलाने वाले कोयले पर निर्भरता कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत जैसे-सौर और पवन ऊर्जा क्षमता को बेहतर निदान के रूप में देखा जा सकता है।

पिछले 150-200 वर्षों में मनुष्य ने ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिये पृथ्वी की सतह के नीचे दबे संसाधनों पर भरोसा किया है। अब सुरक्षित भविष्य के लिए सौर एवं पवन ऊर्जा जैसे उपलब्ध संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाए। इसके लिए एक मजबूत नीतिगत ढाँचे की आवश्यकता होगी जिसमें भारत अहम् भूमिका निभा सकता है। इसके लिए भारत संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के मंच पर ले जाना चाहता है जिससे ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए सभी देशों का ध्यान नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर केंद्रित किया जा सके। जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते के अनुसार, राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित हमारे योगदानों और एक स्वच्छ ग्रह के प्रति हमारी जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए भारत ने संकल्प लिया है कि 2030 तक बिजली उत्पादन की हमारी 40 फीसदी स्थापित क्षमता ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों पर आधारित होगी। साथ ही यह भी निर्धारित किया गया है कि 2022 तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित की जाएगी। इसमें सौर ऊर्जा से 100 गीगावाट, पवन ऊर्जा से 60 गीगावाट, बायो-पावर से 10 गीगावाट और छोटी पनबिजली परियोजनाओं से 5 गीगावाट क्षमता शामिल है।

इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के साथ ही भारत विश्व के सबसे बड़े स्वच्छ ऊर्जा उत्पादकों देशों में शामिल हो जाएगा। यहाँ तक कि भारत कई विकसित देशों से भी आगे निकल जाएगा। वर्ष 2018 में देश की कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा की 63.84 फीसदी, नाभिकीय ऊर्जा की 1.95 फीसदी, पनबिजली की 13.09 फीसदी और नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी 21.12 फीसदी है। भारत कुल स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता और सौर ऊर्जा के उत्पादक के रूप में से विश्व में पाँचवें स्थान पर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में चौथे स्थान पर है। इन सभी निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सरकार अनेक सराहनीय एवं महत्वपूर्ण कदम उठा रही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनुसार ऊर्जा की आपूर्ति हेतु गाँव में बहुत प्रयोग किए जा सकते हैं। इसी के फलस्वरूप सरकार द्वारा गोबरधन योजना शुरू की गई है। भारत सबसे ज्यादा पशुधन आबादी का क्षेत्र है। ऐसे में यह योजना पशुओं से प्राप्त गोबर और ठोस अपशिष्ट को उपयोगी कंपोस्ट, बायोगैस और बायो-सीएनजी में बदलने पर ही केंद्रित है। इस योजना का लाभ किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ गाँवों को स्वच्छ रखने और ऊर्जा उत्पादन में भी मिलेगा। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय देश में बायोमास से बिजली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम चला रहा है। इसका उद्देश्य देश में उपलब्ध बायोमास संसाधनों जैसे- गन्ने की खोई, चावल की भूसी, पुआल, कपास के डंठल आदि का उपयोग बिजली उत्पादन में करना है। नीति आयोग भी कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को मेथनॉल में बदलने की योजना पर विचार कर रहा है। ऐसा होने पर घरेलू रसोई गैस की खपत कम होने की उम्मीद की जा सकती है। इसी क्रम में पूर्वी असम के डिब्रुगढ़ जिले के नामरूप में असम पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड द्वारा पायलट परियोजना के हिस्से के रूप में मेथनॉल गैस पर आधारित खाना पकाने के स्टोव का निर्माण किया गया। यह परियोजना खाना पकाने वाले ईंधन से शुरू हुई है, जो महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए एक नई पहल है। नीति आयोग के अनुसार, 'मेथनॉल एक स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन' है जिसके द्वारा 2030 तक कच्चे तेल के आयात में 10 फीसदी तक की कमी आ सकती है। मई 2018 में राष्ट्रीय पवन-सौर हाइब्रिड नीति जारी की गई। इस नीति का मुख्य उद्देश्य बड़े ग्रिड से जुड़े पवन-सौर फोटो-वोल्टेइक हाइब्रिड प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए एक ढाँचा प्रदान करना है। इसके द्वारा पवन एवं सौर संसाधनों से भूमि का कुशल एवं अधिकतम उपयोग कर अधिक ऊर्जा उत्पादित करने में मदद मिलेगी। इसी क्रम में देश में सौर पार्क स्थापित किये जा रहे हैं। दुनिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क 'शक्ति स्थल' कर्नाटक के पावागढ़ में बनाया गया है। साथ ही देश के 21 राज्यों में कुल 26,694 मेगावाट क्षमता के 47 सौर पार्क स्थापित करने को मंजूरी मिली है।

पर्यावरण हेतु जलवायु परिवर्तन भूगर्भीय, जैविक और पारिस्थितिकीय प्रणालियों को प्रभावित कर रहा है जिससे प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। एच सी एन जी को आंतरिक दहन इंजन के ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे ईंधन का स्वच्छ और शक्तिशाली स्रोत माना जाता है। इसे भविष्य की 'हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था' की दिशा में एक सराहनीय कदम माना जा रहा है। इन सबके अतिरिक्त, स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अगले पाँच वर्षों में 5,000 संयंत्र बनाकर कृषि-अपशिष्ट से जैव-सीएनजी उत्पादन करने के लिए एक योजना शुरू की है। ये संयंत्र न केवल कृषि अपशिष्ट जलाने की समस्या से निपटने में मदद करेंगे बल्कि किसानों को मौद्रिक लाभ भी दिलाएंगे। सरकार खाना पकाने, प्रकाश की व्यवस्था, रूम हीटर आदि हेतु बिजली की मांग को पूरा करने के लिए ऑफ-ग्रिड एवं विकेंद्रीकृत नवीकरणीय कार्यक्रम लागू कर रही है। साथ ही देश में सोलर लालटेन, सोलर स्ट्रीट लाइट, सोलर होम लाइट, सोलर पंप आदि की व्यवस्था किए जाने पर भी जोर दिया जा रहा है। इन सब के साथ-साथ भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने की बात कही है।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने अक्तूबर 2018 में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली सभा, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन की दूसरी ऊर्जा मंत्रीस्तरीय बैठक और दूसरी नवीकरणीय ऊर्जा-इन्वेस्ट मीटिंग और एक्सपो की मेजबानी की। इस तीन दिवसीय आयोजन में 77 से अधिक देशों ने हिस्सेदारी की। इस आयोजन ने विशेषज्ञों को संबंधित क्षेत्र के दायरे में ऊर्जा जरूरतों पर चर्चा करने, सहयोग में आ रही परेशानियों की पहचान करने और संबंधित एजेंसियों के बीच तालमेल पर चर्चा करने के लिये एक मंच प्रदान किया। इस कार्यक्रम ने हिंद महासागर रिम एसोसिएशन और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के बीच समझौते के जरिए रिश्तों को भी मजबूत किया है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन एक अंतर्राष्ट्रीय अंतर-सरकारी संगठन है। इसका मुख्यालय हरियाणा के गुरुग्राम में है। अब तक 71

देशों ने इस गठबंधन के फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इनमें से 48 देशों ने इसे संस्वीकृति प्रदान की है। इस गठबंधन का प्राथमिक उद्देश्य जीवाश्म ईंधन पर ऊर्जा की निर्भरता को खत्म कर सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना है।

इसके अतिरिक्त, सभी सदस्य देशों को सस्ती दरों पर सोलर टेक्नोलॉजी उपलब्ध कराना और इस क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना आदि भी इसके उद्देश्यों में शामिल हैं। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का कहना है कि परिवहन और विद्युत क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा का कम उपयोग, एक स्वच्छ ऊर्जा वाले भविष्य को अंधकारमय कर सकता है। दुनिया की जनसंख्या लगभग 760 करोड़ है जो 2050 तक 900 करोड़ तक पहुँच सकती है। इस जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों की तेजी से खपत हो रही है। संभावित तौर पर सभी गैर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत निकट भविष्य में समाप्त हो जाएंगे, इसलिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत और स्वच्छ ईंधन की खोज एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

भारत एक तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है और किसी भी अर्थव्यवस्था में 'ऊर्जा तथा वित्त' ईंधन का काम करते हैं। वित्त के अभाव में ऊर्जा आर्थिक प्रगति को रफ्तार नहीं दे सकती है। ऐसे में वैश्विक निवेशक उद्योग आज भारतीय ऊर्जा क्षेत्र को एक आकर्षक निवेश मंजिल के रूप में देख रहा है जिसका पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भारत को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के स्तर पर नए कीर्तिमान बनाने होंगे। इसमें भारत सरकार द्वारा 'सूर्य मित्र एप' के जरिये दी गई ट्रेनिंग और 'अभिनव सोच-नई संभावना' के नाम से दिया गया अवार्ड एक सराहनीय कदम है।

भारत की ऊर्जा रणनीति के लिए ऊर्जा भंडारण भी काफी महत्वपूर्ण समझा जा रहा है। ऊर्जा भंडारण क्षेत्र में बेहतरी के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय ऊर्जा भंडारण मिशन तैयार किया गया है। इसे और अधिक प्रभावी तरीके से नवाचार एवं नीतिगत समर्थन पर केंद्रित करना होगा। इसी के साथ हमें ऊर्जा क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास पर जोर देना होगा जो नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करेगा। इसके अतिरिक्त, हमें बिजली की खपत भी कम करनी होगी जिसके लिए 'हरित इमारत कार्यक्रम' एक अहम भूमिका निभा सकता है। यह कार्यक्रम ऊर्जा परिदृश्य को बेहतर करने और आर्थिक बचत सुनिश्चित करने के अलावा संबंधित शहर की वायु की गुणवत्ता और स्वास्थ्य संबंधी दशाओं को भी बेहतर बना सकता है। यदि भारत वास्तव में कम ऊर्जा खपत वाले 'इमारती' बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने में सफल हो जाता है, तो यह ढाँचा आगे चलकर भारत में समावेशी, हरित, स्वस्थ, सुरक्षित और सुदृढ़ शहरों का सफलतापूर्वक निर्माण करने में मददगार साबित हो सकता है।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि लगातार बढ़ते प्रदूषण ने अनेक बीमारियों को जन्म दिया है। इसलिए इसकी रोकथाम के लिए कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को रोकने की बातें कही जाती रही हैं। ऐसे में हमें वैकल्पिक ईंधन के शोध पर जोर देना होगा। इसमें मथनॉल, हाइड्रोजन आधारित ईंधन, जेट्रोफा तेल और शेल गैस अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसके अतिरिक्त दुनिया भर में नीति निर्माताओं और सरकारों के साथ-साथ नागरिकों को पृथ्वी पर पर्यावरण और संसाधनों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ऊर्जा लक्ष्यों को हासिल करना होगा। 'भारत में ऊर्जा की खपत लगातार बढ़ रही है तो वहीं नवीकरणीय ऊर्जा में भी अपार संभावनाएँ देखी जा रही हैं।'



नियति बनाम प्रयास

□ श्री नीरज कुमार गुप्ता
आंकड़ा प्रविष्टक

“नियति को कम न आँको तुम,
शब्दों में भले पराजय झाँको तुम !
समझ लो इसको बहाना मेरा,
असली वजहों को छिपाना मेरा” !!

“पर खाली हाथ भी कई है लौटे,
बंजर जमीन व्यर्थ में हैं जोते !
प्रयासों में उनकी भी सच्चाई,
शायद नियति से है चकमा खाई” !!

“अपनी कमियों को नहीं छिपा रहा,
सांत्वना के जाल भी नहीं बिछा रहा !
बिखरा टूटा नहीं अब भी मैं,
बस जो बीता वही बता रहा” !!

“अंतर में कहा विष फिर से पीले,
उम्मीदों को इकट्ठा कर सपनों को जी ले !
निरंतर नियति के आघात अक्सर
दरका देते हैं मन के कीले” !!

“कदमों को पराजय ने था रोका,
गिरेगा फिर से, हंसकर नियति ने था टोका !
अंतिम प्रयास धर्म था मेरा,
प्रयासों को पर सीमा थी अनंत न था मौका” !!

“मानो बात अवसरों को ठीक से तुम भुनाओं,
शमशीरों को दो धार पुनः उसे चमकाओ !
नियति बलशाली पर प्रयास अमर होता है,
हारो तुम किंतु पराजय से मत घबराओ” !!

ग्लानि-युक्त भाव

□ श्री नीरज कुमार गुप्ता
आंकड़ा प्रविष्टक

वक्त का किया नाश है,
अनुभव नहीं ये काश है !
पछताने का अब मास है,
पराजित मालों की बस जाप है !!

ऋण चुकाने की आशा है,
पापों का कुछ श्राप है !
स्वप्न अब भी काश है,
पर अवसर नहीं अब पास है !!

ग्लानि युक्त अब कास है,
कोई उत्तर नहीं अब पास है !
बीन लक्ष्य जीवन लाश है,
जीवन पर न शाबाश है !!

वर्षों का डूबा प्रयास है,
छूटे करीब से कई आशा हैं !
नव लक्ष्य का अब तलाश है,
पर समुद्र से बुझती न प्यास है !!

भले कहने की न बात है,
पर नियति का भी कुछ हाथ है !
पर साहस अब भी साथ है,
कर्म करना भर अपने हाथ है !!

भारत की आदर्श महिलाएं

□ श्री दीनानाथ साह
लिपिक/टंकक

कबीर दास जी के मत अनुसार नारी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। नारी अनेक रत्नों की खान है। इतना ही नहीं नारी से ही पुरुष की उत्पत्ति होती है। ऐसे में ध्रुव और प्रह्लाद भी नारी की ही देन है।

साल 1971 में एक महिला वकील बेल्ला अब्जुग के प्रयास से महिला समानता दिवस पूरे विश्व में 26 अगस्त को मनाया जाता है। हालांकि इस दिवस को मनाने की शुरुआत सर्वप्रथम न्यूजीलैंड में साल 1893 से हुई थी। लेकिन महिलाओं को उनके हक और अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए यह दिवस सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाने लगा। इस दौरान समाज की वंचित और शोषित महिलाओं को आगे बढ़ाने की कोशिश पुरजोर की जाती है। ताकि वह भी समाज की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। हालांकि भारत जैसे पुरुष प्रधान देश में प्रारंभ से ही महिलाओं की स्थिति काफी सोचनीय रही है, लेकिन हमारे देश में कई ऐसे महापुरुष हुए। जिन्होंने नारी शोषण और समानता के लिए आवाज बुलंद की।

जिनमें प्रमुख है, स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद, राजा राममोहन राय इत्यादि अनेकों महापुरुषों ने नारी समाज के उत्थान के लिए कार्य किया। तो वहीं कुछ ऐसी ही वीरांगनाओं से आज हम आपको रूबरू कराने जा रहे हैं, जिन्होंने यह साबित कर दिखाया कि यदि नारी चाहे तो वह कुछ भी कर सकती है। बशर्ते वह चाहे रण भूमि हो या सियासत के गालियारे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नारी की महत्व पृथ्वी ही नहीं बल्कि तीनों लोकों में स्वीकार की गई है।

● सावित्री बाई फूले

भारत की प्रथम शिक्षिका और समाज सुधारिका के रूप में जाने जानी वाली सावित्री बाई फूले का जन्म ३ जनवरी 1831 को हुआ था। जिन्हें अपने पति ज्योतिराव गोविंदाराव फूले के साथ महिला अधिकारों के प्रति आवाज बुलंद की। साथ ही इन्होंने बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। इनके पिता खन्दोजी नेवसे और माता लक्ष्मी थी। तो वहीं गुरु महात्मा ज्योतिबा के सान्निध्य में सावित्री बाई ने विधवा विवाह कराना, छुआछुत मिटाना, दलित महिलाओं को शिक्षित करना अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लिया था।



इतना ही नहीं स्कूल जाते वक्त जब लोग उनपर कीचड़ और पत्थर फेंका करते थे तो वह स्कूल पहुंचने के बाद अपनी साड़ी बदल लिया करती थी। ऐसे में हमें उनके चरित्र से निरंतर प्रयासरत रहने की प्रेरणा भी मिलती है। तो वहीं वह एक आदर्श कवियत्री के रूप में भी जानी जाती हैं। मानवता का संदेश देने वाली सावित्री बाई फूले का निधन प्लेग मरीजों की देखभाल के दौरान 10 मार्च 1897 को हो गया था। लेकिन उनके कार्य और विचार आज भी महिलाओं को उनके हक और अधिकारों के लिए प्रेरित करते हैं।

● कैप्टन लक्ष्मी सहगल



24 अक्टूबर 1914 को मद्रास (चेन्नई) में जन्मी लक्ष्मी सहगल राजनीति में किसी भी बड़े पद पर रहकर कार्य कर सकती थी। क्योंकि उनके पिता डॉ. एस स्वामीनाथन हाई कोर्ट के वकील थे और मां एवी अम्मुकुट्टी स्वतंत्रता सेनानी थी। लेकिन उन्होंने सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज का हिस्सा बनना स्वीकार किया। और रानी झांसी रेजिमेंट में लक्ष्मी सहगल काफी सक्रिय रही। इस दौरान उन्हें कर्नल की जिम्मेदारी सौंपी गई। लेकिन लोग उन्हें कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नाम से जानते हैं।

एम.बी.बी.एस. होने के कारण लक्ष्मी सहगल ने दिसंबर 1984 में हुए भोपाल गैस कांड में मरीजों और पीड़ितों को चिकित्सीय सहायता प्रदान की। इतना ही नहीं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आंदोलन में भी लक्ष्मी सहगल ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। लेकिन 19 जुलाई 2012 को कार्डियाक अटैक आने की वजह से लक्ष्मी सहगल की मौत हो गई। जिनकी याद में कानपुर में लक्ष्मी सहगल इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनाया गया है।

● सरोजिनी नायडू

जब आपको अपना झंडा संभालने के लिए किसी की आवश्यकता हो और जब आप आस्था के अभाव से पीड़ित हों तब भारत की नारी आपका झंडा संभालने और आपकी शक्ति को थामने के लिए आपके साथ होगी और यदि आपको मरना पड़े तो याद रखिएगा कि भारत के नारीत्व में चित्तौड़ की पद्मिनी की आस्था समाहित है।



भारत की कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था। इनके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक वैज्ञानिक थे। और सरोजिनी नायडू आगे चलकर एक सफल कवियत्री के रूप में जानी गईं। बात करें राजनीतिक जीवन की तो सरोजिनी नायडू गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक पिता मानती थीं। साथ ही सरोजिनी नायडू राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थीं, जिसके चलते उन्होंने गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका में काफी सहयोग किया।

इसके अलावा सरोजिनी नायडू ने भारत की स्वतंत्रता के लिए विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया। साथ ही जलियांवाला बाग हत्याकांड से दुखी होकर उन्होंने कैसर ए हिन्द सम्मान लौटा दिया था। तो वहीं सरोजिनी नायडू ने भारतीय समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ भारतीय महिलाओं को हमेशा जागृत किया। जिसके चलते वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनीं। इस प्रकार सरोजिनी नायडू एक कुशल राजनेता होने के साथ-साथ एक अच्छी लेखिका भी थीं। आपको बता दें कि मात्र 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने 1300 पंक्तियों की कविता “द लेडी आफ लेक” लिख डाली थी। लेकिन 2 मार्च 1949 को सरोजिनी नायडू हमारे बीच से चली गईं।

● कादम्बिनी गांगुली



18 जुलाई 1961 को बिहार के भागलपुर में जन्मी कादम्बिनी गांगुली चिकित्सा शास्त्र की डिग्री लेने वाली प्रथम महिला थी। इनके पिता बृजकिशोर बासु ने अपनी पुत्री की शिक्षा पर हमेशा ध्यान दिया। ब्रिटिश समय में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा भले ही मुश्किलों भरी रही हो लेकिन उसी समय में कादम्बिनी ने सिर्फ भारत ही नहीं अपितु साउथ एशिया की पहली चिकित्सा डिग्री धारक महिला के रूप में विश्व प्रसिद्ध हुई।

इतना ही नहीं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन के लिए कादम्बिनी ने काफी चंदा भी इकट्ठा किया था। तो वहीं बंकिम चंद्र चटर्जी की रचनाओं से प्रभावित होकर कादम्बिनी ने सामाजिक कार्यों में सक्रियता दिखाई। जिसके चलते इन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सबसे पहली भाषण देने वाली महिला का गौरव प्राप्त है। तो वहीं कादम्बिनी ने कोयला खादानों में कार्य करने वाली महिलाओं के लिए भी आवाज उठाई। लेकिन 3 अक्टूबर 1923 को कलकत्ता में कादम्बिनी हमारे बीच से चली गई। लेकिन देश के प्रति उनका लगाव हर भारतीय के लिए एक प्रेरणा है।

● सुचेता कृपलानी

25 जून 1908 को पंजाब के अंबाला शहर में जन्मी सुचेता कृपलानी भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी थी। उनके राजनीतिक जीवन का सफर आसान न था, क्योंकि पिता की मृत्यु के बाद उनपर घर परिवार की जिम्मेदारी आ गई थी। लेकिन भारत के स्वतंत्र होने के बाद वह राजनीति में सक्रिय हो गई। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास की प्रवक्ता के तौर पर भी कार्य किया था। इतना ही नहीं कांग्रेस से अलग होने के बाद सुचेता ने अपनी किसान मजदूर प्रजा पार्टी भी बनाई और साल 1962 में उन्होंने विधानसभा का चुनाव लड़ा और वह उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बन गई। सुचेता उन महिलाओं में से हैं जो गांधी जी के काफी करीब रही और कई आंदोलनों में उन्होंने भाग लिया और कई बार जेल की सजा भी काटी। लेकिन 1 दिसंबर 1974 को इनका देहासवान हो गया।



● रानी कितूर चैनम्मा



भारत के कर्नाटक राज्य में रानी चैनम्मा का नान बड़े ही अदब से लिया जाता है। कर्नाटक के बेलगाम के पास ककती नामक गांव में जन्मी रानी चैनम्मा ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से पहले ही अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरांदाजी में परांगत रानी चैनम्मा ने अकेले ही अंग्रेजी शासकों के प्रति विद्रोह की घोषणा कर दी थी। लेकिन वह अधिक समय तक अंग्रेजों से लोहा नहीं संभाल पाई। और 21 फरवरी 1829 को अंग्रेजों से लड़ाई के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

● रानी अहिल्याबाई होल्कर

ईश्वर ने मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी है, मुझे उसे निभाना है। साथ ही हर उस कार्य जिसके लिए मैं जिम्मेदार हूं। मुझे उसका जवाब ईश्वर को देना है।



अपने परिवार के 27 जनों को खोने के बाद भी इस नारी शासिका ने प्रजा और सत्ता की बागडोर को बखूबी संभाला। शिव भक्त अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई सन् 1725 में हुआ था। हालांकि इनके पिता मानकोजी शिंदे एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन इनका विवाह इंदौर के संस्थापक मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव के साथ हुआ था। ऐसे में अहिल्याबाई अपने ससुर से राजकाज की शिक्षा लिया करती थीं। जिसने उन्हें आगे चलकर एक शासिका के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। इन्होंने अपने शासनकाल में प्रजा के हित के लिए हमेशा कार्य किया। तो वहीं अहिल्याबाई होल्कर ने सदैव अपने शासन की रक्षा के लिए सेना को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रखा।

बच्चों और महिलाओं की स्थिति को लेकर हमेशा चिंतन करने वाली महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने सदैव नारी समाज के उत्थान के लिए कार्य किया। साथ ही धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत रानी अहिल्याबाई ने देश के विभिन्न स्थानों और नगरों में मंदिरों, धर्मशालाओं और अन्नसत्रों का निर्माण करवाया। साथ ही यातायात के विकास के लिए कई जगहों पर सड़कों और रास्तों का निर्माण कराया। इतना ही नहीं 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर की स्थापना का श्रेय भी महारानी अहिल्याबाई होल्कर को दिया जाता है। लेकिन राज्य का भार और अपनों से बिछड़ने का दुख उनसे अधिक सहन नहीं हो पाया, जिसके चलते 13 अगस्त 1795 को उनकी मृत्यु हो गई।

● भीखाजी कामा



भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। एक महान् देश भारत के हितों को इससे क्षति पहुंच रही है। आगे बढ़ो हम हिंदुस्तानी है और हिंदुस्तान हिंदुस्तानियों का है।

ऐसे विचारों से ओत प्रोत भारतीय मूल की पारसी नागरिक भीखाजी कामा का जन्म 24 सितंबर 1861 को बंबई (मुम्बई) में हुआ था। भीखाजी कामा को जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर में सातवीं अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस के दौरान भारतीय झंडा लहराने का श्रेय दिया जाता है। एक धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद भीखाजी कामा ने सुखी जीवन की अपनी इच्छाओं का त्याग कर देश को अंग्रेजी शासन से आजाद करने में बीता दिया। इसलिए इन्हें भारतीय राष्ट्रियता की महान पुजारिन कहा जाता है। ये जहां गई इन्होंने वहां जाकर भारतीय स्वाधीनता की अलख जलाई, और स्वराज के लिए लोगों को एकजुट किया। लेकिन असीम सेवा भाव के चलते प्लेग रोगियों की सेवा करते करते 13 अगस्त 1936 को 73 वर्ष की आयु में हमने एक महान स्वतंत्रता सेनानी को खो दिया।

● दुर्गाबाई देशमुख

भारत की स्वतंत्रता सेनानी और स्वतंत्र भारत के पहले वित्तमंत्री चिंतामणराव देशमुख की धर्मपत्नी दुर्गाबाई देशमुख किसी परिचय की मोहताज नहीं। मात्र 14 साल की उम्र में ही अपने दमदार भाषण के दम पर जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी सोचने पर मजबूर कर दिया था। ऐसी विलक्षण प्रतिभा की धनी दुर्गाबाई देशमुख का जन्म 15 जुलाई 1909 को आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी जिले के काकीनाडा में हुआ था।



बचपन में ही पिता श्री रामाराव का साया सिर से उठने के बाद अपनी माता कृष्णवेनम्मा की परवरिश में वह पली बड़ी। और दुर्गाबाई के मन में देशप्रेम और समाजसेवा के संस्कार बचपन से ही पड़े थे। जिनके बल पर उन्होंने नमक सत्याग्रह में मशहूर नेता टी. प्रकाशम के साथ भाग लिया था, इस दौरान इन्हें एक वर्ष की जेल भी हो गई थी। लेकिन दुर्गाबाई देशमुख ने हार न मानी। बल्कि जेल से बाहर आते ही उन्होंने पुनः आंदोलन में सक्रियता दिखाई।

इतना ही नहीं दुर्गाबाई देशमुख ने आंध्र प्रदेश में नारियों के उत्थान के लिए कई संस्थाओं और प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना करवाई। साथ ही आजादी के बाद योजना आयोग द्वारा प्रकाशित भारत में समाज सेवा का विश्वकोश भी इन्हीं के निर्देशन में तैयार हुआ था। साथ ही इन्होंने कानून की पढ़ाई कर महिलाओं के हक के लिए काफी लड़ाई लड़ी थी। तो वहीं साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दुर्गाबाई देशमुख को यूनेस्को पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। 9 मई 1981 को दुर्गाबाई देशमुख का निधन हो गया, लेकिन उनके द्वारा स्थापित किए गए परिवारिक न्यायालय कई परिवारों और स्त्रियों, बच्चों के हक के लिए कार्य कर रहे हैं।

इस प्रकार हमारे इतिहास में कई ऐसी नारियों के उदाहरण हैं, जिन्होंने सिर्फ नारी समाज के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को अपने जीवनकाल से एक गहरा संदेश दिया है कि मानवता से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता है।

नारी निन्दा ना करो, नारी रतन की खान।

नारी से नर होत है, ध्रुव प्रह्लाद समान।



जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है

□ श्री शैलेन्द्र कुमार मौर्या

आपने देखा होगा कि बच्चों में हर चीज के प्रति अत्यधिक उत्साह होता है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक वे हमेशा उर्जा से भरे रहते हैं। उनमें एक दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा का भाव भले ही हो, किंतु वे अपने दिन के भीतर नफरत सींचकर नहीं रहते। वे कुछ भी नया जानने के लिए आतुर रहते हैं उन्हें न तो अनदेखे भविष्य की चिंता होती है और न ही वे अपनी आत्मा पर बीते कल का बोझ ढोना पसंद करते हैं पर हमारे जीवन का एक पहलू यह है कि जैसे-जैसे हम बड़े और परिपक्व होते हैं वैसे-वैसे इस उत्साह, मस्ती और जिंदादिली से वंचित होते जाते हैं। स्कूल कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद जब जीवन के वास्तविक संघर्षों से दो-चार होना पड़ता है तो जीवन के प्रति उत्साह में अचानक कभी महसूस होने लगती है आज हम कोशिश करेंगे कि अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी सूत्र एकत्रित करें।

पहला सूत्र यह है कि जीवन में रचनात्मकता की कुछ न कुछ संभावना बनी रहनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि आप अपने जीवन का रचनात्मक कार्यों में गुजारे। इसका सूत्र यह है कि व्यक्ति को किसी न किसी सामाजिक कार्य से जुड़े रहना चाहिए।

जीवन में उत्साह बनाए रखने के लिए कुछ और भी सूत्र है जैसे कि उम्र चाहे कितनी भी हो जाए अपने भीतर के बच्चे को मरने नहीं देना चाहिए। अपने भीतर के बच्चे को जिंदा रखने का अर्थ सिर्फ इतना है कि संकोच और झिझक को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए और अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी कुछ समय अच्छे दोस्तों और रुचियों के लिए जरूर निकालें।



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग हेतु आचार संहिता

□ श्री अमित कुमार वर्मन

आचार संहिता उन मूल्यों और सिद्धांतों का एक व्यापक विवरण है, जिससे भारत में लेखापरीक्षकों और लेखाकार के दैनिक कार्य का मार्गदर्शन होता है। सार्वजनिक क्षेत्र के लेखापरीक्षक की स्वतंत्रता, शक्तियां और उत्तरदायित्व तथा उसके द्वारा लेखांकन तथा लेखापरीक्षण के कार्य हेतु नियुक्ति अथवा तैनात कर्मचारियों पर उच्च नैतिक जिम्मेदारी डालते हैं। इस आचार संहिता में तीस (30) व्यावसायिक मानदण्ड समिति द्वारा जारी सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थाओं हेतु मानदण्ड में निहित व्यापक सिद्धांतों में सामंजस्य बिठाकर केंद्रीय सिविल सेवा आचरण नियमावली में निहित मूल्य और सिद्धांतों को शामिल किए गए हैं। इस प्रकार भारत की आचार संहिता के आचरण नियमावली में भारतीय सिविल सेवकों के लिए निर्धारित सामान्य नैतिक अपेक्षाएं तथा लेखापरीक्षकों के व्यावसायिक दायित्वों सहित उनकी विशिष्ट अपेक्षाएं शामिल हैं। आचार संहिता प्रत्येक लेखापरीक्षक के अध्यक्ष तथा उसकी ओर से कार्य करने वाले सभी कार्यकारी अधिकारियों तथा व्यक्तियों पर लागू होता है जो लेखा तथा लेखापरीक्षा का कार्य करते हैं।





हिंदी दिवस 2020 समारोह के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग, के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।

हिंदी दिवस 2020 समारोह के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी एवं वी.एल.सी.) महोदय, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग, के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।



आदरणीय महालेखाकार महोदय, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग, हिंदी दिवस 2020 समारोह के पावन अवसर पर विजयी प्रतियोगी को पुरस्कृत करते हुए।

आदरणीय महालेखाकार महोदय, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग, हिंदी दिवस 2020 समारोह के पावन अवसर पर विजयी प्रतियोगी को पुरस्कृत करते हुए।





“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर आदरणीय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग महोदय द्वारा विजयी प्रतियोगी को पुरस्कृत करते हुए।

“हिन्दी दिवस 2020” के पावन अवसर पर सभागार को संबोधित करते हुए आदरणीय श्री आनन्द कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी महोदय।



“हिन्दी दिवस 2020” समारोह के दौरान उपस्थित आदरणीय अधिकारीगणों एवं कर्मचारीगणों की एक झलक।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग में कार्यरत राजभाषा संवर्ग के श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक, हिंदी दिवस 2020 समारोह के पावन अवसर पर कार्यक्रम-उद्घोषक की भूमिका में।





“हिन्दी दिवस 2020” के सुअवसर पर सभागार में उपस्थित सभी आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा “राष्ट्रगान की प्रस्तुति” की एक झलक।

“हिन्दी दिवस 2020” के सुअवसर पर सभागार में उपस्थित सभी आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा “राष्ट्रगान की प्रस्तुति” की एक झलक।



“हिन्दी दिवस 2020” समारोह के पावन अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग में कार्यरत राजभाषा संवर्ग के आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।

आदरणीय प्रधान महालेखाकार श्री अथिखो चलाई महोदय, विदाई समारोह में सभागार को संबोधित करते हुए।





वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 में विजयी प्रतिभागियों की एक झलक।



वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 के फुटबॉल प्रतियोगिता की एक झलक।



वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 के वॉलीबॉल प्रतियोगिता के महिला प्रतिभागियों की एक झलक।



वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 में भाग लेते हुए महिला प्रतिभागीगण की एक झलक।



वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 में विजयी प्रतियोगियों की एक झलक।



वार्षिक खेल कार्यक्रम 2021 में विजयी प्रतियोगियों की एक झलक।



हिन्दी कार्यशाला के दौरान उपस्थित आदरणीय प्रतिभागीगणों की एक झलक।



स्वतंत्रता दिवस 2021 के पावन अवसर पर "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" करते हुए आदरणीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय।



स्वतंत्रता दिवस 2021 के पावन अवसर पर सामूहिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" का एक दृश्य।



स्वतंत्रता दिवस 2021 के पावन अवसर पर उपस्थित आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



स्वतंत्रता दिवस 2021 के पावन अवसर पर "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" के दौरान राष्ट्रगान प्रस्तुत करते हुए आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



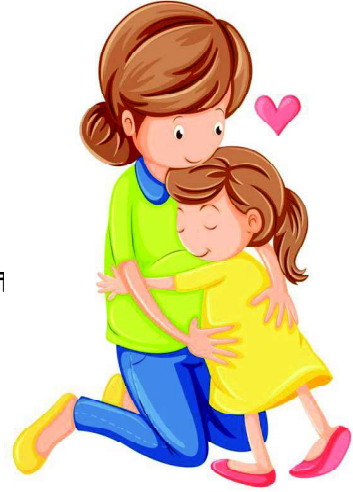
स्वतंत्रता दिवस 2021 के पावन अवसर पर सामुहिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में उपस्थित आदरणीय गणमान्यों की एक झलक।

माँ

□ श्रीमती मेघा रानी
(पत्नी भागीरथ प्रसाद)

एक बात कहती हूँ, गलत मत समझना
अपनी बात को कभी, भगवान की तरह मत पूजना।
भगवान को इस धरती पर, बस भगवान बनकर है रहना
उन्हें तो सिर्फ मंदिर में, मूर्ति बनकर है बैठना।

माँ किसी की बेटी, बहन, सहेली, पत्नी एवं कर्मचारी भी है,
याद करो माँ के सभी किरदारों को, जिससे वह कभी नहीं हारी।
ऐसी न होगी माँ सी कोई और भूमिका, जब माँ होने से टकरा ज
नासमझी में बच्चा माँ को दोषी ठहरा जाए,
अगर करते हो सचमुच अपने माँ से प्यार,
तो अपनाकर दिखाओ उसके बाकी किरदार।



मुसाफिर

□ श्री गोरख राम

तू कहे ये घर मेरा
मैं कहूँ ये घर मेरा।
यह घर न तेरा न मेरा
यह घर दो पल का बसेरा।
चलते मुसाफिर का
कहां कोई ठिकाना।
पल में बदल जाएगा
ये मुसाफिरखाना।
फिर मुसाफिर होकर
घर अपना क्यों बताएं।
ये जिंदगी जब अपनी नहीं
तो दूसरों को क्यों सताएं।

दो पल मायूस होकर नहीं
खुशियों में जी लें।
प्रेम का रस खुद नहीं
दूसरों को पिलाएं।
जो पल बीता वो भी भला
जिंदगी की दोर किसके हाथ
ये किसी को पता न चला।
फिर यह घर कहां
यो तो मुसाफिरखाना।
दो पल की जिंदगी
सब कुछ यहीं छूट जाना।

मेरी किताब

□ श्रीमती मंजिता रायचौधुरी
सहायक लेखा अधिकारी

मैं और मेरी किताब-
अक्सर कुछ बातें करते हैं,
कुछ ना कुछ लिखती हूँ
लिखती हूँ, मिटाती हूँ।
अपने आप पढ़ती हूँ
आज भी कुछ लिखना चाहती हूँ।
मगर क्या लिखूँ ?
दर्द लिखूँ या दवा लिखूँ ?
आंसू लिखूँ या खुशी लिखूँ ?
बीती हुई उत्कृष्ट पल या यादें लिखूँ ?
या वर्तमान पल की कहर लिखूँ ?
मिलावट करनी पड़ती है
कुछ झूठे अरमानों को भी
टूट जाए जो भ्रम जिंदगी का
सच लिखूँ तो कैसे लिखूँ?
मैं आज दुविधा में हूँ, लिखूँ तो क्या लिखूँ
न लिखूँ तो मेरे किताब की पन्ने
खाली कैसे रखूँ?



मूलमंत्र

□ श्री राजीव जोशी

केवल मन के चाहने से ही
मनचाही होती नहीं किसी की,
बिना चले कब कहां हुई है
मंजिल पूरी यहां किसी की।

पर्वत की चोटी छूने को
पर्वत पर चढ़ना पड़ता है।
सागर से मोती लाने को
गोता खाना ही पड़ता है।

बिना किए प्रयास तो चींटी
भी अपना घर बना न पाती,
प्रयास के बिना न सिंह को
भी अपना शिकार मिल पाता।

इच्छा पूरी होती तब जब
उसके साथ जुड़ा हो प्रयास।
सफलता प्राप्त करने को है
मूल मंत्र उद्योग परिश्रम।



शिलांग की बारिश

□ सुश्री अराधना कुमारी

रिमझिम रिमझिम बरसे बादल
बारिश में वो भीगे आंगन।

हर तरफ मची है हलचल
पंख लगाकर उड़ते ये मन।
मिट्टी लाई खुशबू भीनी
महक उठी हर फूल की कली।
बहती जाए पूरवाई सुहानी
मल्हार गाए मीठी बोली।
रंग बिरंगे फूल खिलते हैं

खेत खलिहान हरे भरे।
हर तरफ फैली खुशियां हैं
लक्ष्मी आई घर के द्वारे।



वनाग्नि

□ श्रीमती रानी गिरि

वनाग्नि से उत्पन्न हानिकारक धुआँ, उत्सर्जित (कार्बन के) महीन कण वायु प्रदूषण में मौजूद हानिकारक गैसों के साथ मिलकर प्रत्यक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। इससे न केवल आँखों में जलन और श्वसन प्रणाली में परेशानी आती है बल्कि फेफड़े को भी क्षति पहुँचती है, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा का अटैक और समय से पहले मृत्यु, ऐसी बहुत-सी समस्याएँ हैं जिनका आधार वनाग्नि के कारण वायु प्रणाली में प्रवेश करने वाले महीन कण हो सकते हैं। सितंबर 2019 से शुरू हुई आस्ट्रेलिया की भीषण वनाग्नि के चलते जहाँ एक ओर व्यापक स्तर पर जान-माल की क्षति हुई है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण के लिए यह एक भयावह संकट की स्थिति बन गई है। इस वनाग्नि में आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स तथा क्वींसलैंड जैसे क्षेत्र मुख्य रूप से प्रभावित हुए हैं। जनवरी 2020 के मध्य तक आस्ट्रेलियाई वनाग्नि के कारण 18 मिलियन हेक्टेयर भू-भाग जल चुका है, जिसके चलते 2,800 से अधिक घरों सहित 5,900 इमारतें नष्ट हो गई हैं। जान-माल के साथ-साथ बहुत बड़ी संख्या में वन्यजीवों को भी इससे क्षति पहुँची है। आग की शुरुआती तबाही के बाद इसके प्रभाव अभी भी जारी है। एक अनुमान के अनुसार, निवास स्थान तथा खाद्य पदार्थों की क्षति के कारण आने वाले हफ्तों और महीनों में कुल मिलाकर अरबों की संख्या में वन्यजीवों, पक्षियों तथा कीटों के मरने की संभावना है।

यह क्षति जैव-विविधता में आ रही भारी गिरावट का एक स्याह पक्ष प्रस्तुत करती है। विश्व की स्थलीय जैव-विविधता वनों में केंद्रित है: ये विश्व की वन्यजीवों, वनस्पतियों और कीट-पतंगों की सभी स्थलीय प्रजातियों के 80 प्रतिशत से अधिक भाग के आवास स्थान हैं। इसलिए जब वनों में आग लगती है, तो वह जैव-विविधता जिस पर मनुष्य अपने दीर्घकालिक अस्तित्व के लिए निर्भर है, भी राख में परिवर्तित हो जाती है। वर्तमान में 1 मिलियन से अधिक प्रजातियों को विलुप्ति का सामना करना पड़ रहा है यदि हमने अपनी गतिविधियों में कोई परिवर्तन नहीं किया तो चरम मौसम की घटनाओं जैसे “भीषण वनाग्नि” प्रजातियों के अस्तित्व के लिए गंभीर चिंता का विषय बन जाएगा। जनवरी 2020 में प्राप्त जानकारी के अनुसार, आग से निकले धुएँ और इससे होने वाले वायु प्रदूषण के कारण कैनबेरा की वायु गुणवत्ता (विश्व के किसी भी बड़े शहर की तुलना में) सबसे खराब पाई गई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विशेष रूप से वृद्ध लोग, कार्डियोरेस्पिरेटरी रोग से पीड़ित रोगी, बच्चे और प्रत्यक्ष रूप से बाह्य वातावरण में कार्य करने वाले लोग (मजदूर इत्यादि) इससे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। वनाग्नि से निकलने वाला धुआँ एक निश्चित सीमा से बंधा हुआ नहीं होता है, यदि आस्ट्रेलिया भीषण वनाग्नि का सामना कर रहा है तो ऐसा बिलकुल नहीं है और न ही होगा कि इसका असर केवल इस महाद्वीप तक ही सीमित रहें। प्रायः यह देखने को मिलता है कि वनाग्नि से उत्सर्जित ऊष्मा से उत्पन्न दबाव के चलते धुआँ समताप मंडल में प्रवेश कर जाता है।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, आस्ट्रेलिया की झाड़ियों में लगी आग का धुँआ प्रशांत महासागर को पार कर चुका है, जो जल्द ही अंटार्कटिक क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है। इससे पूरे आस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों

की वायु गुणवत्ता को खतरनाक स्थिति में पहुँचा दिया है, इतना ही नहीं इसने न्यूजीलैंड और दक्षिण अमेरिका के शहरों की वायु गुणवत्ता को भी प्रभावित किया है, जल्द ही इसके अर्जेंटीना एवं चिली तक पहुँचने की संभावना है। वनों को क्षति पहुँचाने वाली इस प्रकार की घटनाओं से न केवल भौतिक रूप से नुकसान होता है बल्कि मानसिक क्षति भी इसका एक भयावह रूप प्रकट करती है। घर, वस्तुएँ, पालतू जानवर, पशुधन या आजीविका के अन्य स्रोतों को खोने तथा जीवन की रक्षा हेतु आपातकालीन निकासी का भयावह अनुभव मानसिक आघात भी पहुँचाता है, जिससे बाहर निकलना कभी-कभी संघर्षपूर्ण हो जाता है। आस्ट्रेलियाई वनाग्नि के मामले में ऐसे बहुत-से उदाहरण देखने को मिले जो इस स्थिति को बेहतर ढंग से स्पष्ट कर सकते हैं।

वनाग्नि की घटना के दौरान कुछ लोगों के क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति बाधित हो गई, तो कहीं पर ईंधन स्टेशनों ने कार्य करना बंद कर दिया, तो मार्ग अवरुद्ध हो जाने के कारण लोग समय पर उस स्थान को खाली नहीं कर पाए और उच्च जोखिम वाले उन क्षेत्रों में फंसे रहे। सुरक्षा की तलाश में कुछ लोगों को समुद्र तट और नावों पर शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, ऐसी स्थिति में प्रभावित लोगों पर घटना का स्थायी मानसिक आघात होना, एक सामान्य स्थिति है। 2019-20 की आस्ट्रेलियाई वनाग्नि तक यह माना जाता था कि आस्ट्रेलियाई वन, देश भर में हुई छोटी-बड़ी वनाग्नि की घटनाओं में उत्सर्जित कार्बन को अवशोषित करने के लिए पर्याप्त है। इसका अर्थ है कि आस्ट्रेलियाई वनों को शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन का दर्जा प्राप्त था। हालाँकि कोपरनिकस मानिटरिंग प्रोग्राम के अनुसार, जलवायु परिवर्तन ने वनाग्नि की घटनाओं को अधिक तीव्रता प्रदान की है। वर्ष 2019-2020 की घटना के दौरान अभी तक 400 मेगाटन कार्बन डाईऑक्साइड वातावरण में उत्सर्जित हो चुकी हैं, इसके प्रत्यक्ष प्रभाव की कल्पना भी असहनीय है। पिछले तीन महीनों में हुआ यह कार्बन उत्सर्जन आस्ट्रेलिया के औसत वार्षिक कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन के बराबर है। यह न केवल आस्ट्रेलिया के वार्षिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को बढ़ाएगा, बल्कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन में भी योगदान करेगा और वनाग्नि की बारंबारता की संभावना में भी वृद्धि करेगा जिससे और अधिक कार्बन उत्सर्जन होगा। यह जलवायु प्रतिक्रिया लूप अथवा फांस से संबंधित एक गंभीर विषय है।

आस्ट्रेलियाई वनाग्नि का एक अन्य गंभीर प्रभाव प्रदूषण के रूप में भी देखने को मिल रहा है। वनाग्नि से निकली राख खेल के मैदानों, घरों, आस्ट्रेलिया के समुद्र तटों और मीठे पानी के स्रोतों जैसे महत्वपूर्ण स्थानों में प्रवेश कर रही है, वहाँ जमती जा रही है। पीने के पानी के स्रोत आमतौर पर वन क्षेत्रों में होते हैं, इसलिए वे वनाग्नि से उत्पन्न प्रदूषण की चपेट में आ रहे हैं। वनाग्नि की राख में भारी मात्रा में पोषक तत्व जैसे- नाइट्रोजन और फास्फोरस निहित होते हैं। पोषक तत्वों की बढ़ी हुई मात्रा सायनोबैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा दे सकती है, जिसे आमतौर पर नीले-हरे शैवाल के रूप में जाना जाता है। सायनोबैक्टीरिया रसायनों को उत्पादित करता है जो खराब स्वाद, गंध और कभी-कभी विषाक्त रसायनों सहित पानी की खराब गुणवत्ता जैसी समस्याओं का कारण बन सकते हैं।

यदि यह राख समुद्र में अथवा जलधाराओं और नदियों में प्रवेश करती है तो संबंधित जल स्रोत की पारिस्थितिकी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वनाग्नि के चलते व्यापक स्तर पर चारागाह नष्ट हो गए हैं, पशुधन के

साथ-साथ अंगूर के बाग भी नष्ट हो गए हैं, ऐसी स्थिति में पहले से ही सूखे की चुनौती का सामना कर रहे क्षेत्र में पुनर्वृद्धि से जल संसाधनों पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। मीडिया रिपोर्टों से ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि इस वनाग्नि से देश की डेयरी आपूर्ति के गंभीर रूप से प्रभावित होने की संभावना है, हालाँकि अभी तक कोई स्पष्ट आँकड़ें प्राप्त नहीं हुए हैं तथापि विक्टोरिया और न्यू साउथ वेल्स के साथ-साथ आस्ट्रेलिया के प्रमुख दुग्ध उत्पादक राज्य वृहद स्तर पर फार्मलैंड और बुनियादी ढाँचे के नुकसान का सामना कर रहे हैं। इतना ही नहीं इसके चलते व्यापक स्तर पर मांस, ऊन और शहद का उत्पादन भी प्रभावित हो सकता है।

राष्ट्रीय स्तर पर भेड़ के झुंडों का लगभग 13 प्रतिशत उन क्षेत्रों में पाया जाता है जो वनाग्नि के कारण आंशिक रूप से प्रभावित हुए हैं और 17 प्रतिशत ऐसे क्षेत्रों से है जो इस घटना के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं। जलवायु परिवर्तन और भूमि पर 2019 की आई.पी.सी.सी. (Intergovernmental Panel on Climate Change) की रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के चलते उष्मन, वर्षा के बदलते पैटर्न और कुछ चरम मौसमी घटनाओं की उच्च आवृत्ति के कारण खाद्य सुरक्षा और कृषि उद्योग पहले से ही काफी प्रभावित है। कुछ शुष्क क्षेत्रों में, भूमि की सतह के वायु तापमान और वाष्पीकरण में वृद्धि हुई है, इससे वर्षा की मात्रा में कमी आई है जिससे मरुस्थलीकरण में इजाफा हुआ है। जलवायु परिवर्तन से प्रभावित इन क्षेत्रों में आस्ट्रेलिया भी शामिल है। ऐसी पर्यावरणीय स्थिति में इतने व्यापक स्तर पर वनाग्नि की घटना का यदि अल्पकालिक प्रभाव इतना गंभीर है तो इसके दीर्घकालिक प्रभाव की कल्पना कितनी भयावह होगी, इसका अंदाजा लगाना भी कठिन कार्य है। आस्ट्रेलिया की इस घटना ने न केवल आस्ट्रेलियाई लोगों बल्कि संपूर्ण विश्व को जलवायु परिवर्तन एवं उष्मन के मानवीय, पारिस्थितिकीय और आर्थिक विनाश की एक अंतर्दृष्टि प्रदान की है। आस्ट्रेलियाई वनाग्नि के चलते देश की अर्थव्यवस्था को जो नुकसान पहुँचा है, उसका अभी भी विश्लेषण किया जा रहा है, लेकिन यह स्पष्ट है कि बुनियादी ढाँचा क्षतिग्रस्त हो चुका है और इसका प्रभाव खेती और पर्यटन जैसे उद्योगों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

कुछ व्यवसाय और संस्थान वायु प्रदूषण के उच्च स्तर के चलते अपने कार्य को बंद करने के लिए मजबूर हो गए हैं। रोजगार, उत्पादन, आपूर्ति और आवागमन/परिवहन के ढाँचे को जिस स्तर पर क्षति पहुँची है उसने न केवल देश की अर्थव्यवस्था को कई वर्ष पीछे कर दिया गया है, बल्कि प्रतिस्पर्धा के इस दौर में इस समय देश का पूर्ण रूप से ध्यान केवल अपने बुनियादी ढाँचे को दुरुस्त करने एवं जीवन को सामान्य करने पर लगा हुआ है, जो एक चिंताजनक एवं कष्टकारी परिदृश्य है।



COVID-19

□ श्री संजीव कुमार गणेश
डी.ई.ओ.

जीवन था यूँ ही गतिशील,
सरिता में जैसे बहे जैसे सलिल।
फिर भी सब मिलते-जुलते थे,
चेहरे दो पल को खिलते थे।।

घर हो या फिर खेल-मैदान,
मंदिर- मस्जिद और सारे धर्मस्थान।
विकास की सौँधी खुशबू से,
महक रहा था अपना हिंदुस्तान।।

फिर बनकर जैसे दावानल,
पूरी सृष्टि को जाने निगल।
काल रूपी कोरोना आया,
जन- जीवन पर संकट गहराया।।

अदृश्य है दिखता नहीं वो मायावी
नित-दिन लेता रूप बदल।
बच्चे, वृद्ध या हो युवा,
सब हो जाते असहाय - निर्बल ।।

घर में ही सब हुए कैद
जीवन कुछ दिनों तक थमा रहा।
अपनों के बिछुड़ जाने से,
माहौल मातम का बना रहा।।

पर मानव की इच्छा शक्ति के आगे,
कभी न कोई है टिक पाया।
इस दुष्ट से लड़ने को भी,
हथियार बनकर टिका आया।।

हमारे आपके प्रयासों से,
पड़ा जरूर है वह कमजोर।
लेकिन असावधानी, अनदेखी से
फिर आ सकता है लाशों का दौर।।

तो प्यारे देशवासियों
रखे स्वच्छता का पूरा ध्यान।
मास्क, दो गज दूरी और टीकाकरण,
इसी में है सबका कल्याण।।



शहीद मेजर दुर्गा मल्ल की प्रतिमा स्थापन

□ श्री गणेश प्रसाद शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

सन् 1927 से 1937 के वर्षों में देश भर में राष्ट्रवाद की लहर दौड़ गई। सन् 1920 के दशक के अंत में देहरादून में एक युवा गोरखा लड़का राष्ट्रीय आंदोलन से अत्यधिक प्रभावित था। वह केवल चौदह के थे, लेकिन उन्होंने नियमित रूप से जनसभा में भाग लिया और मुक्त भारत के लिए सपना देखा। सन् 1930 के दशक में जब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ, लड़के ने इसमें सक्रिय हिस्सा लिया। सविनय अवज्ञा के प्रतिशोध में अंग्रेजों ने लोगों को बांटने का तमाम प्रयास किए। अंबेडकर के आंदोलन के माध्यम से अभिव्यक्ति पाने वाले अछूतों की जायज और स्वाभाविक नाराजगी स्वतंत्रता की राष्ट्रवादी मांग के खिलाफ निभाई गई। अंग्रेजों ने भी इस विचार का प्रचार करते हुए गोरखाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से बाहर रखने की मांग की कि वे (गोरखा) ब्रिटिश साम्राज्य के वफादार सेवक हैं।

राष्ट्रीय जागृति से इतनी प्रेरणा प्राप्त यह युवा बालक मेजर दुर्गा मल्ल था। राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी से चिंतित उनके माता-पिता ने उन्हें सन् 1931 में सेना में शामिल होने के लिए राजी किया। वह भी एक प्रदर्शन में भाग लेने के लिए पुलिस से भाग रहा था। उन्होंने खुद को समझा-बुझाने की इजाजत दी और गोरखा राइफल्स के 2/1 बी.एन. में शामिल हो गए।

जल्द ही उन्हें सिग्नल हवलदार के रूप में पदोन्नत किया गया। उन्हें सन् 1941 में युद्ध के मैदान में भेजा गया था। सितंबर 1941 तक उनकी बटालियन मलाया में थी। दिसंबर में भारतीय सैनिकों के एक समूह ने मलाया के जंगल में खुद को खो दिया था। इनमें से दो कैप्टन मोहन सिंह और हवलदार दुर्गा मल्ल थे। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग ने अपने टोकियो सम्मेलन में इंडियन नेशनल आर्मी बनाने का फैसला लिया था। कैप्टन मोहन सिंह ने कमान संभाली। उन्हें जापानियों ने दिसंबर, 1942 में गिरफ्तार किया था।

आई.एन.ए. में मेजर दुर्गा मल्ल को मेजर का रैंक दिया गया और उन्हें इंटेलीजेंस का काम सौंपा गया। वह बर्मा सीमा में तैनात था। उन्हें सामरिक महत्व के बारे में जानकारी रंगून स्थित आई.एन.ए. मुख्यालय को भेजनी थी। मणिपुर के उखरूल में दुश्मन के कैंप की जानकारी इकट्ठा करते हुए उसे ब्रिटिश सेना ने पकड़ लिया और दिल्ली भेज दिया।

आजाद हिंद फौज के सरेंडर के बाद ब्रिटिश सरकार ने शाह नवाज खान, गुरु बक्स सिंह ढिल्लों और सेगहाल पर देशद्रोह के आरोप में कोशिश की थी। यह सार्वजनिक मुकदमा एक गलती थी क्योंकि पूरा भारत मुकदमे की निंदा करने में शामिल हो गया था। अंत में ब्रिटिश सरकार को फैसले में बदलाव कर उन्हें रिहा करना पड़ा। यह सब इतिहास की किताबों में लिखा है। लेकिन इतिहास की किताबों में इस बात का जिक्र नहीं है कि इनके साथ अफसरों को दो गोरखा अफसर भी जेल में कैद कर रहे थे। वे कैप्टन, दलबहादुर थापा और मेजर दुर्गा मल्ल थे। मेजर दुर्गा मल्ल को 25 अगस्त 1944 को फांसी दी गई थी और कैप्टन दलबहादुर थापा को 3 मई 1945 को दिल्ली सेंट्रल जेल में फांसी दी गई थी।

भारत सरकार ने हमारे देश की आजादी की लड़ाई में गोरखा सैनिकों की सेवाओं का सम्मान किया है और संसद भवन के बाहर मेजर दुर्गा मल्ल की प्रतिमा स्थापित की है।

शिक्षा की महिमा

□ श्रीमती नमिता भट्टाचार्य

शिक्षा है एक ऐसा ज्ञान
जो बनाता है सभी को महान।
जीवन की पूंजी है शिक्षा
सफलता की पूंजी है शिक्षा।
चाहे कितना पढ़ लें हम
अनंत होती शिक्षा, कभी नहीं होती खत्म शिक्षा।
शिक्षा पाकर साधारण व्यक्ति भी बन सकता है महान
शिक्षित व्यक्ति की दुनिया में हर जगह मिले आदर सम्मान।
इस जग में शिक्षा का नहीं है कोई पर्याय
शिक्षा के बिना न खुले कभी सफलता की अध्याय।
शिक्षा ऐसी हो जिसमें मानवता का कल्याण हो
बुद्धि की विकास से सत चरित्र का निर्माण हो।
क्योंकि शिक्षा है सबका भगवान
जो बनाता है मुख को भी बुद्धिमान।
तो आओ आज मिल के प्रण लें
समाज के शोषित-वंचित को भी,
शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़ाकर
उनके जिंदगी का अंधकार मिटाएं।
सारा समाज हमारा सफलता की ओर बढ़े
आसमान को भी मुट्ठी में भर लें,
तब जाकर हमारा समाज आगे बढ़े।



शुभ विचार

□ श्रीमती सायन्तनी गुप्ता

1. बात करना अच्छा है, परंतु चुप रहना श्रेय है।
2. थोड़ा पढ़ना, थोड़ा बोलना, किंतु अधिक सुनना बुद्धिमान बनने का उपाय है।
3. चरित्र मनुष्य के अंदर, यश उसके बाहर रहता है ।
4. चरित्रवान बनो, जगत अपने आप मुग्ध हो जाएगा।
5. कल उठने की आशा सोच रखनेवाला व्यक्ति आज तक नहीं जाग सका।
6. बिना लहर के सागर में नाविक निपुण नहीं बनता है।
7. अपने लक्ष्य को उंचाई तक पहुंचाना, आसमान छूने की आकांक्षा जैसी होती है, जैसे ही हम आगे बढ़ते हैं, वैसे ही वह हमसे दूर भागती है।
8. जो व्यक्ति अच्छे विचारों की सुखद संगति में रहता है, वह कभी अकेला नहीं होता है।
9. वार्तालाप बुद्धि को मूल्यवान बनाता है परंतु एकांत प्रतिभा का पाठशाला बनाता है।
10. विद्या स्वयं ही एक शक्ति है।
11. लापरवाही प्रायः अज्ञानता से भी अधिक क्षति पहुंचाती है।
12. कष्ट हृदय की कसौटी है।
13. सुंदरता ही दुनिया को बचाएगी।



ई-कचरा

□ श्रीमती स्निग्धा फुकन

विकसित देश ई-कचरे से भली-भांति परिचित है। हमारे देश में जैसे-जैसे डिजिटाइजेशन बढ़ा है, उसी अनुपात में ई-कचरा भी बढ़ा है। इसकी उत्पत्ति के प्रमुख कारकों में तकनीक तथा मनुष्य की जीवनशैली में आने वाले बदलाव शामिल हैं। कोरोना काल में स्मार्टफोन, टैबलेट और लैपटॉप की मांग आनलाइन पढ़ाई जैसी विवशताओं के कारण और भी वृद्धि हुई है। इसके अलावा इनके नए-नए संस्करणों के प्रति लोगों की चाहत ने भी मुश्किल खड़ी कर दी है। लोग कुछ ही महीनों में गैजेट बदलते रहते हैं। कंप्यूटर तथा उससे संबंधित अन्य उपकरण तथा टी.वी., वाशिंग मशीन तथा फ्रिज जैसे घरेलू उपकरण एवं कैमरे, मोबाइल फोन तथा उससे जुड़े अन्य उत्पाद जब उपयोग से बाहर हो जाते हैं तो इन्हें संयुक्त रूप से ई-कचरे की संज्ञा दी जाती है। लग भग हर महीने नए संस्करण आने से इस कचरे में वृद्धि हो जाती है।

असली दिक्कत ऐसे ई-कचरा से होने वाले पर्यावरणीय और मानवीय नुकसान की है। चाहे मोबाइल फोन हों, लैपटॉप या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व उनकी बैटरियां आदि, इन सभी में इस्तेमाल होने वाले धात्विक, प्लास्टिक और विकिरण पैदा करने वाले कलपुर्जे सैकड़ों साल तक जमीन में स्वाभाविक रूप से घुल कर नष्ट नहीं होते हैं। रोजमर्रा के जिन्दगी में इस्तेमाल में लाए जाने वाले चीजें जैसे ट्यूबलाइट, बल्ब, सी.एफ.एल. उनमें भी पारे जैसे कई प्रकार के विषैले पदार्थ पाए जाते हैं, जो इनके बेकार हो जाने पर पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

ई-कचरे के साथ स्वास्थ्य और प्रदूषण संबंधी चुनौतियाँ जुड़ी हैं। ई-कचरे में शामिल विषैले तत्व तथा उनके निस्तारण के असुरक्षित तौर-तरीकों से मानव स्वास्थ्य पर असर पड़ता है और तरह-तरह की बीमारियाँ होती हैं। इलेक्ट्रॉनिक चीजों को बनाने में काम आने वाली सामग्रियों में ज्यादातर कैडमियम, निकेल, क्रोमियम, एंटीमोनी, आर्सेनिक, बेरिलियम और पारे का इस्तेमाल किया जाता है। ये सभी पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। एक कंप्यूटर में सीसा, फास्फोरस, कैडमियम व मरकरी जैसे घातक तत्व होते हैं, जो जलाए जाने पर सीधे वातावरण में घुलते हैं। बच्चों के आधुनिक खिलौनों में जो बैटरी इस्तेमाल होती है, वह घातक रसायनों (विषैले तत्वों) के संमिश्रण से तैयार की जाती है और तोड़ने पर पर्यावरण को बुरी तरह प्रदूषित करती है। जब इस कचरे का पुनःचक्रण किया जाता है अर्थात् उसे अलग किया जाता है तो ये सभी पदार्थ बाहर निकलते हैं। ऐसे में इस काम में लगे लोग इससे बुरी तरह प्रभावित होते हैं। जब यह ई-कचरा सेनेटरी लैंडफिल में जाकर अन्य प्रकार के कचरे के साथ मिलता है तो इसके और भी हानिकारक प्रभाव होते हैं। ई-कचरे के पुनर्चक्रण के दौरान निकलने वाले घातक पदार्थों में पारे और प्लास्टिक का निस्तारण करना बेहद कठिन होता है। ई-कचरे में से तांबा, सीसा, चांदी तथा सोना जैसी कीमती धातुएँ भी निकलती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, ई-कचरे के निस्तारण की प्रक्रिया में इसे तोड़ने के काम में खतरा अपेक्षाकृत कम है, लेकिन जब इसे पुनःचक्रित किया जाता है तो जलाने और एसिड आदि का उपयोग होने के कारण खतरा कई गुना बढ़ जाता है। इसे जलाने के दौरान जहरीला धुआँ निकलता है, जो कि काफी घातक होता है। पुनर्चक्रण

की प्रक्रिया के दौरान काफी चीजें तो यह काम करने वाली कंपनियाँ ले जाती हैं, लेकिन कुछ चीजें नगर निगम के कचरे में चली जाती हैं, जो हवा, मिट्टी और भूमिगत जल में मिलकर बेहद घातक धुएँ और धूल के कारण फेफड़े व किडनी दोनों को नुकसान पहुँचा सकती हैं। इसके अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड तथा क्लोरो-फ्लोरो कार्बन भी पुनःचक्रण की प्रक्रिया जनित होती हैं, जो वायुमंडल व ओजोन परत के लिए हानिकारक हैं।

ई-कचरे की बढ़ती मात्रा को देख भारत सरकार ने अक्टूबर 2016 में ई-कचरा प्रबंधन नियम बनाया था। यह नियम उत्पादनकर्ता, उपभोक्ता, अपशिष्ट संग्रहकर्ता आदि सभी लोगों पर लागू होगा। इसके अलावा उत्पादनकर्ता को कुछ नियमों में रह कर अपना उत्पादन करना पड़ेगा। अगर वह इन नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो उन्हें दंड का प्रावधान भी किया जाएगा। इस नियम के तहत श्रमिकों को ई-कचरा निपटान के लिये प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके साथ-साथ उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की रहेगी।

इसमें प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बनाए जाएंगे। इनको यह अधिकार दिया जाएगा की, पुनर्चक्रण एजेंसियाँ की जांच करे की वह नियमों का पालन कर रही है या नहीं। इसके अलावा और भी कई चीजों को ई-कचरा प्रबंधन नियम में शामिल की गई है। अगर हम सभी भारतीय नागरिकों ने इस नियम को अपना लिया तो शायद हम आने वाले कुछ सालों में ई-कचरे का निपटान जरूर कर देंगे।

इसके अलावा, भारत में ई-कचरे के संबंध में कई नियम कानून लागू किये गए हैं। आवश्यक है कि इस संबंध में निर्मित विभिन्न कानूनों को सही ढंग से लागू किया जाए, ताकि ई-कचरे के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों को समाप्त किया जा सके। हालाँकि अभी भी भारत में औपचारिक क्षेत्र की पुनर्चक्रण क्षमता का सही उपयोग संभव नहीं हो पाया है, क्योंकि ई-कचरे का बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

ध्यान देने की बात यह है कि लोगों के सहयोग के बिना ई-कचरे के प्रबंधन संभव नहीं है। ई-कचरे के विषय में जागरूकता नगण्य है। लोगों को इसके विनाशकारी परिणामों से आगाह करवाना अत्यंत आवश्यक है तभी प्रत्येक घर से निकलने वाले ई-कचरा को कम किया जा सकेगा।

यदि ई-कचरे के समस्या की कोई सही समाधान न निकली, तो यह सदियों तक प्रकृति को प्रदूषित करता रहेगा। प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर ही स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कल्पना साकार हो सकती है।

(आभार: इंटरनेट)



पेड़

□ श्री सिद्धार्थ गिरि

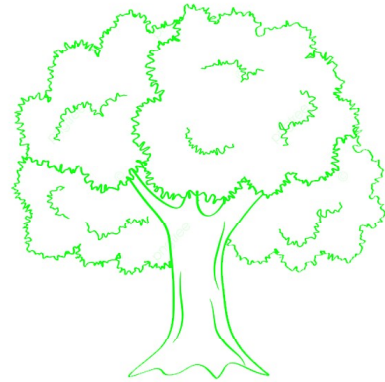
मैं मन ही मन सोचता रहता हूँ
किसी से भी नहीं कहता हूँ

अगर पेड़ भी चलते होते,
दिन रात चलते होते,
कितने मजे के दिन हमारे होते,
बांधकर तने में उसके रस्सी,
चाहे जब कभी भी,
जहाँ कहीं भी, उसे हम ले जाते।

जहाँ कहीं भी,
जब कभी भी,
वर्षा हो जाती,
उसके नीचे तुरंत हम छिप जाते।
लगती भूख यदि अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके हम खूब खाते,

आती बाढ़ कभी भी,
कहीं तो,
तुरंत पेड़ पर हम चढ़ जाते।

अगर पेड़ भी चलते होते,
दिन रात चलते होते,
कितने मजे हमारे होते!



सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों का विवरण

क्र.सं	अधिकारी/कर्मचारी का नाम श्री/श्रीमती	पदनाम	दिनांक
1.	पेले लिंगदोह	वरिष्ठ लेखाकार	01.02.2021
2.	केरलिंगा खारचांदी	पर्यवेक्षक	28.02.2021
3.	कुमार थापा	बहुकार्य कर्मचारी	28.02.2021
4.	मंटू चंद्र दास	बहुकार्य कर्मचारी	31.03.2021
5.	हानबारसन पाठाव	सहपर्यवेक्षक	31.03.2021
6.	सितेश चंद्र दास	सहपर्यवेक्षक	31.05.2021
7.	फाई सिंह स्वेर	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2021
8.	जेरेल्लिन एफ. सिन्नाह	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2021
9.	लिंडा सफिरा मारबानियांग	लेखाकार	31.07.2021

स्वर्गगामी कार्मिकों का विवरण

क्र.सं	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	दिनांक
1.	स्व. मणिपाल मारबानियांग	बहुकार्य कर्मचारी	16.04.2021
2.	स्व. फ्रांकि ए.पेरियट	वरिष्ठ लेखाकार	14.06.2021
3.	स्व. क्रियटिना वारज्री	वरिष्ठ लेखाकार	20.08.2021



आदरणीय श्री काहोतो जे.
येपथोमी, वरिष्ठ उप
महालेखाकार (ले.ह. एवं वी.
एल.सी.) एवं आदरणीय श्री
पृथ्वीपाल सिंह कानावत,
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन) महोदय के विदाई
समारोह में सभागार को
संबोधित करते हुए
आदरणीय महालेखाकार श्री
फ्रेडरिक सिम्लेह महोदय।

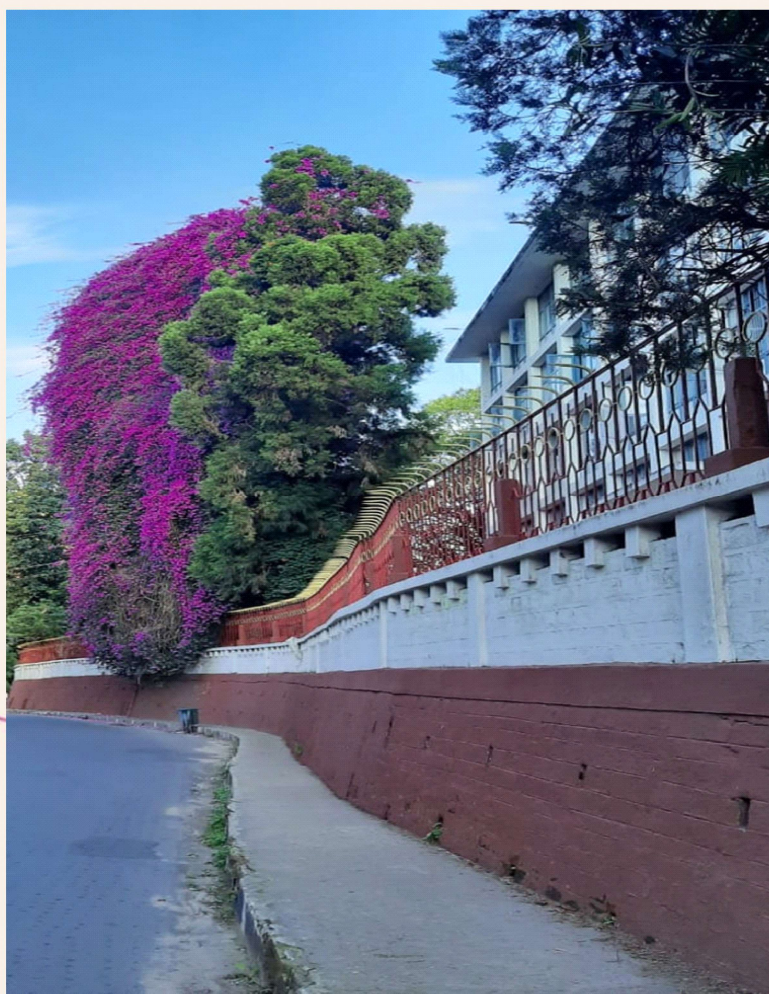
विदाई समारोह में संबोधित
करते हुए आदरणीय वरिष्ठ उप
महालेखाकार (ले.ह. एवं वी.एल.
सी.) श्री काहोतो जे. येपथोमी
महोदय।



विदाई समारोह में संबोधित
करते हुए आदरणीय वरिष्ठ
उप महालेखाकार (प्रशासन)
श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत,
महोदय।



विदाई समारोह में संबोधित करते हुए आदरणीय वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री सवेरियुस नांबाह महोदय एवं उपस्थित अधिकारीगण के एक झलक।



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग के प्राकृतिक सौंदर्य।